गरवी गुजरात

RNI No.: UPHIN/25/A1697

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

लखनऊ से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 354
दि. 27.04.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

'पहले चरण में ही टूटा टीएमसी का अहंकार', बंगाल में पीएम मोदी ने किया बीजेपी की प्रचंड जीत का दावा

पीएम मोदी ने दावा किया कि पहले चरण में वोटिंग के बाद साफ हो चुका है कि बंगाल में बीजेपी प्रचंड जीत दर्ज करने जा रही है।

'मां रो रही हैं', 'माटी' घुसपैठियों के साथ; 'मानुष' डरा हुआ है', पीएम मोदी का ममता पर निशाना

"बंगाल में महा जंगलराज", पीएम मोदी ने टी२३ के कोलकाता प्रोग्राम में अराजकता को लेकर ममता सरकार को घेरा

(जीएनएस)।

पश्चिम बंगाल में दूसरे चरण के लिए 29 अप्रैल को वोटिंग होगी। दूसरे चरण के लिए राजनीतिक दलों का चुनाव प्रचार जारी है। इसी तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बंगाल में विजय संकल्प सभा को संबोधित किया। इस दौरान पीएम मोदी के निशाने पर टीएमसी और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी रहीं। पीएम मोदी ने दावा किया कि पहले चरण में वोटिंग के बाद साफ हो चुका है कि बंगाल में बीजेपी प्रचंड जीत दर्ज करने जा रही है।

टीएमसी का अहंकार टूट गया– पीएम मोदी

पीएम मोदी ने कहा, ह्लपहले चरण के मतदान में बंगाल ने कमाल कर दिया है। पहले चरण में टीएमसी का अहंकार टूट गया है। अब दूसरे चरण में भाजपा की प्रचंड जीत पक्की होने जा रही है। बंगाल का ये चुनाव अब अंतिम चरण में है, लेकिन आपने एक बात नोटिस की होगी, 15 साल पहले टीएमसी मां-माटी-मानुष की बातें करके सत्ता में आई थी, लेकिन अब इनके मुंह से मां-माटी-मानुष ये शब्द तक नहीं निकलते। आखिर क्यों? क्या कारण है? ये टीएमसी वाले अगर मां-माटी-मानुष की याद दिलाएंगे तो इनके पाप सामने आ जाएंगे। टीएमसी की निर्ममता ने मां को रुला दिया, माटी को सिंडिकेट और घुसपैठियों के हवाले कर दिया और बंगाल के मानुष को पलायन के लिए मजबूर कर दिया।'

पीएम मोदी ने कहा कि बंगाल के पास सब कुछ है। उन्होंने कहा कि बंगाल के लोगों के पास सामर्थ्य भरपूर है, इसलिए बंगाल फिर से देश का नंबर वन राज्य बन सकता है। पीएम मोदी ने कहा कि हमें बस नेताजी सुभाष चंद्र बोस के आ'न को याद रखना है। नेताजी ने कहा था, तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा। नेताजी के इस आ'न पर देशवासियों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। पीएम मोदी ने कहा कि आज बंगाल को आपके एक वोट की जरूरत है। आप हमें अपना आशीर्वाद दीजिए, अपना वोट दीजिए, हम आपको टीएमसी से आजादी दिलाएंगे।

टीएमसी पर निशाना साधते हुए पीएम मोदी ने कहा, ह्लटीएमसी के महाजंगलराज की सबसे बड़ी पीड़ित हमारी बहनें और बेटियां हैं। बहनों के साथ सबसे बड़ा धोखा हुआ है, इसलिए इस बार सबसे अधिक गुस्सा बहनों में ही दिख रहा है। संदेशखाली में बहनों के साथ गुंडे अन्याय करते रहे। टीएमसी की निर्मम सरकार गुंडों का साथ देती रही। यहां बहनों को ही गाली दी गई। बंगाल के भाइयों और बहनों, इसे कभी भी भूलना नहीं है।'

पीएम मोदी ने कहा कि टीएमसी के महाजंगलराज में यहां से बेटियां लापता हो रही हैं, लेकिन यहां की टीएमसी सरकार सोई पड़ी है। उन्होंने कहा कि बेटियों की इन्हें कोई चिंता नहीं है। पीएम मोदी ने कहा कि अब और नहीं, 4 मई के बाद भाजपा की सरकार इन गुंडों का चुन-चुन कर हिसाब करेगी।

'राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सुरक्षित हैं, जानकर राहत मिली...', वॉशिंगटन होटल में फायरिंग पर बोले पीएम मोदी

(जीएनएस)।

वॉशिंगटन में हिल्टन होटल में हुई फायरिंग में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप समेत सभी अधिकारियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया. अब भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस मामले पर प्रतिक्रिया दी है. उन्होंने फायरिंग के बाद ट्रंप के सुरक्षित रहने पर राहत भरी सांस ली है.

पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट शेयर करते हुए इस घटना की निंदा की है. उन्होंने ट्रंप समेत सभी अधिकारियों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना भी की.

प्रधानमंत्री ने लिखा, 'ये जानकर राहत मिली कि वॉशिंगटन डीसी के एक होटल में हुई हालिया सिक्योरिटी ब्रीच के बाद राष्ट्रपति ट्रंप, फर्स्ट लेडी और उपराष्ट्रपति सुरक्षित और स्वस्थ हैं. मैं उनकी लगातार सुरक्षा और कुशल मंगल की कामना करता हूं. लोकतंत्र में हिंसा की कोई जगह नहीं है और इसकी निंदा की जानी चाहिए.

डिनर के दौरान कई राउंड फायरिंग

बता दें कि हिल्टन होटल में 'व्हाइट हाउस कॉरेस्पोंडेंट्स डिनर' के दौरान एक संदिग्ध ने कई राउंड फायरिंग कर दी. इस दौरान बॉलरूम में ट्रंप, फर्स्ट लेडी मेलानिया ट्रंप, अमेरिकी उप-राष्ट्रपति जेडी वेंस समेत दिग्गज कैबिनेट अधिकारी मौजूद थी. हालांकि सुरक्षाकर्मियों ने सभी को होटल से सुरक्षित बाहर निकाल लिया. राष्ट्रपति ट्रंप ने इस घटना के बाद व्हाइट हाउस में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की.

'वर्दी का गौरव और सीएम का साथ', लखनऊ पुलिस लाइन में गूंजी महिला आरक्षियों की शपथ, योगी सरकार की नीतियों को सराहा

(जीएनएस)।

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को 60,244 आरक्षी नागरिक पुलिस सीधी भर्ती के अंतर्गत वर्ष 2025 बैच के पुलिस आरक्षियों के दीक्षांत परेड समारोह में शामिल हुए। रिजर्व पुलिस लाइन में आयोजित भव्य समारोह में मुख्यमंत्री ने परेड का निरीक्षण किया और सलामी ली। मुख्यमंत्री के संबोधन के बाद चयनित महिला आरक्षियों ने खुशी जाहिर करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया और सरकार की नीतियों की सराहना की। रायबरेली की दीप्ति पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में महिला आरक्षी पद की शपथ लेना उनके लिए गर्व का क्षण है। उन्होंने कहा कि सरकार ने महिलाओं को सुरक्षा के साथ जिम्मेदारी निभाने का अवसर दिया है। जो जिम्मेदारी मिली है, उसे पूरी निष्ठा से निभाएंगी।

योगी सरकार में बढ़ा महिलाओं का मान-सम्मान

चयनित पुलिस आरक्षी सुमन यादव ने कहा कि प्रदेश की योगी सरकार का यह कदम महिलाओं के मान-सम्मान को बढ़ाने वाला है। उन्होंने महिलाओं से आगे आकर देश और प्रदेश की सेवा करने की अपील की। जौनपुर की प्रीति पटेल ने कहा कि योगी सरकार में महिलाओं को समान अवसर मिल रहे हैं और भर्ती प्रक्रिया पूरी पारदर्शिता के साथ हो रही है। गाजीपुर की श्रुति यादव ने कहा कि उन्हें देश और प्रदेश की सेवा करने का मौका मिला है, यह उनके लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री की मौजूदगी से सभी चयनित आरक्षियों का उत्साह कई गुना बढ़ गया है।

सीएम योगी के नेतृत्व में बढ़ा आत्मविश्वास

आरक्षी के पद पर चयनित काजल सिंह ने कहा कि पुलिस विभाग का हिस्सा बनकर बेहद अच्छा लग रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व से महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है और किसी से डर नहीं लगता। उन्होंने कहा कि सभी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनकर समाज को आगे बढ़ाने में योगदान देना चाहिए। आरक्षी के पद पर चयनित आरती यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश पुलिस में सेवा का अवसर मिलना सम्मान की बात है और वह अपने कर्तव्यों का पूरी निष्ठा से पालन करेंगी।

फिर पाकिस्तान के दौरे पर ईरान के विदेश मंत्री अराघची, 48 घंटे में दूसरा दौरा, अमेरिका परेशान

(जीएनएस)।

ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची की कूटनीतिक दौड़-भाग ने वैश्विक राजनीति में हलचल मचा दी है। पिछले दो दिनों में उनका दूसरा पाकिस्तान दौरा इस बात का पुख्ता संकेत है कि मध्य पूर्व के तनाव को कम करने के लिए पर्दे के पीछे कोई बड़ी रणनीति तैयार हो रही है। ईरान ने कड़ा रुख अपनाते हुए अमेरिका से सीधे बातचीत करने से इनकार कर दिया है और पाकिस्तान को एक भरोसेमंद 'मध्यस्थ' के रूप में आगे किया है।

ओमान के सुल्तान के साथ शांति बहाली पर गहन चर्चा करने के तुरंत बाद अराघची का दोबारा इस्लामाबाद पहुंचना बेहद महत्वपूर्ण है। यह दौरा न केवल ईरान और अमेरिका के बीच संदेशों के आदान-प्रदान का जरिया है, बल्कि क्षेत्र में युद्ध की आहट के बीच शांति की एक नई उम्मीद भी जगाता है।

अब्बास अराघची का दो दिनों के भीतर दोबारा पाकिस्तान जाना सामान्य

बात नहीं है। शनिवार को पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और आर्मी चीफ जनरल आसिम मुनीर से मिलने के बाद वे ओमान चले गए थे। अब दोबारा इस्लामाबाद पहुंचकर वहां के नेताओं से चर्चा करने के बाद वे सीधे रूस के लिए उड़ान भरेंगे। यह पूरा घटनाक्रम दिखाता है कि ईरान अपनी सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों को लेकर रूस और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों के साथ मिलकर एक मजबूत घेरा तैयार करने की कोशिश कर रहा है।

पाकिस्तान बना ईरान-अमेरिका का 'मैसेंजर'

ईरान और अमेरिका के बीच लंबे समय से चली आ रही कड़वाहट अब एक नए मोड़ पर है। ईरान ने साफ कर दिया है कि वह अपनी शर्तें और अमेरिका की मांगों पर अपनी आपत्तियां सीधे वॉशिंगटन को नहीं भेजेगा। इसके लिए उन्होंने पाकिस्तान को चुना है। शनिवार की मीटिंग में अराघची ने पाकिस्तान को एक दस्तावेज सौंपा था जिसमें ईरान की शर्तें लिखी हैं।

दिल्ली की गर्मी से लड़ने की पूरी तैयारी, सीएम रेखा गुप्ता का मास्टर प्लान तैयार

दिल्ली में हर साल गर्मियों के दौरान तापमान नए रिकॉर्ड छूता है। तेज धूप, लू और लंबे समय तक रहने वाली गर्म हवाएं आम लोगों की जिंदगी को मुश्किल बना देती हैं। ऐसे में राजधानी में 'हीटवेव एक्शन प्लान 2026 को लेकर सरकार की तैयारी चर्चा का विषय बनी हुई है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अगुवाई में दिल्ली सरकार ने इस बार गर्मी को सिर्फ मौसम नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और नागरिक सुरक्षा से जुड़ा बड़ा मुद्दा मानते हुए व्यापक योजना तैयार की है।

इस योजना का मकसद सिर्फ चेतावनी जारी करना नहीं, बल्कि गर्मी का असर बढ़ने से पहले हर जरूरी व्यवस्था को जमीन पर उतारना है।

सीएम धामी ने देहरादून में सुना 'मन की बात', पीएम मोदी के नेतृत्व को बताया प्रेरणास्रोत

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को मोथरोवाला, देहरादून में बड़ी संख्या में उपस्थित स्थानीय लोगों के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम के 133वें संस्करण को सुना। मुख्यमंत्री ने कहा कि मन की बात कार्यक्रम देशवासियों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है।

उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री समाज के विभिन्न वर्गों के प्रेरक कार्यों, नवाचारों, स्टार्टअप, स्वच्छता, आत्मनिर्भर भारत, पर्यावरण संरक्षण एवं लोक संस्कृति से जुड़े विषयों को प्रभावी रूप से सामने रखते हैं, जिससे लोगों को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

अखिलेश ने वढ सरकार पर लगाया 'पीड़ित परिवार का बयान बदलाने' का आरोप, हाथरस केस से की तुलना

(जीएनएस)।

गाजीपुर में गंगा नदी में 15 वर्षीय किशोरी का शव मिलने के मामले में सियासी घमासान तेज हो गया है। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रविवार (26 अप्रैल) योगी सरकार पर सीधा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि पीड़ित परिवार पर बयान बदलने का दबाव डाला जा रहा है और इस घटना को हाथरस कांड की पुनरावृत्ति बताया।

अखिलेश यादव ने (पूर्व ट्विटर) पर पीड़िता के पिता का वीडियो शेयर करते हुए लिखा कि बयान बदलने से सच नहीं बदल जाता। उत्तर प्रदेश ने कभी इतना कमजोर मुख्यमंत्री नहीं देखा, जिनके राज में गरीब और बेबस पीड़ितों पर अपने बयान बदलने का दबाव डाला जाता है।

उन्होंने दावा किया कि जब SP का प्रतिनिधिमंडल परिवार से मिलने गया था, तो उन पर पत्थर फेंके गए। एक

पुलिस अधिकारी भी घायल हुआ। अखिलेश ने सवालों की झड़ी लगा दी कि FIR में देरी क्यों? बयान क्यों बदले गए? पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर भरोसा क्यों नहीं? उन्होंने कहा कि सच सबको पता है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट चाहे कुछ भी कहे, जमीनी हकीकत गांव में हर किसी को मालूम है।

रढ प्रमुख ने मामले की तुलना 2020 के हाथरस गैंगरेप-हत्या कांड से की। उन्होंने कहा कि दोनों मामलों में हाशिए पर पड़े परिवारों के साथ अन्याय हुआ और 'दबंग तत्व' आरोपी थे। अखिलेश ने पूछा कि क्या दिखावटी कार्रवाई से पीड़ित परिवार को इंसाफ मिल पाएगा?

पीड़िता के पिता का बयानः राजनीति से दूर रहना चाहते हैं

25 अप्रैल को लड़की के पिता ने पत्रकारों से साफ कहा था कि वे राजनीतिक फायदे के लिए किसी नेता के घर आने नहीं चाहते। उन्होंने कहा, मैं अपनी बेटी की मौत से बहुत दुखी हूं। पुलिस ने मेरी शिकायत पर कार्रवाई की, मुख्य आरोपी गिरफ्तार है। मैं नहीं चाहता कि कोई नेता राजनीतिक अवसरवादिता के लिए आए।

'आप' ने राज्यसभा सांसदों की सदस्यता रद्द करने के लिए भेजी याचिका

(जीएनएस)।

आम आदमी पार्टी ने पंजाब के लोगों के साथ गद्दारी करके भाजपा में शामिल हुए राघव चड्ढा समेत सभी सांसदों की सदस्यता समाप्त करने के लिए राज्यसभा के सभापति और उपराष्ट्रपति को अपनी याचिका भेज दी है। रविवार को यह जानकारी साझा करते हुए वरिष्ठ नेता और सांसद संजय सिंह ने कहा कि संविधान के विशेषज्ञ भी मान रहे हैं कि आम आदमी पार्टी को छोड़कर भाजपा में विलय करने वाले सभी सांसदों की सदस्यता जानी तय है।

सातों सांसदों ने न सिर्फ "आप" गद्दारी की है, बल्कि पंजाब के लोगों, लोकतंत्र और संविधान के साथ धोखा किया है। तोड़फोड़ के खेल में भाजपा माहिर है। भाजपा पहले ईडी-सीबीआई से विपक्ष के नेताओं को डराती है और फिर अपनी पार्टी में शामिल कर लेती है।

सबकी सदस्यता निश्चित रूप से समाप्त होगी

रविवार को "आप" मुख्यालय पर प्रेस वार्ता कर संजय सिंह ने कहा कि संविधान के ज्ञाताओं, देश के वरिष्ठ अधिवक्ता और संविधान विशेषज्ञ कपिल सिब्बल, पीडीटी आचार्य समेत तमाम लोगों ने यह साफ कर दिया है कि जिन सात लोगों ने आम आदमी पार्टी को छोड़कर भाजपा में विलय करने का फैसला लिया है, उन सबकी सदस्यता निश्चित रूप से समाप्त होगी।

शनिवार को मीडिया बातचीत में एनडीए के घटक दल से जुड़े सर्वोच्च न्यायालय के एक अधिवक्ता ने भी स्पष्ट कहा कि इन नेताओं की सदस्यता तो हर हाल में जाएगी।

राज्यसभा के सभापति और उपराष्ट्रपति को भेजी गई याचिका

संजय सिंह ने आगे कहा कि सभी विशेषज्ञों से बातचीत करके और कपिल सिब्बल की राय लेकर मैंने राज्यसभा के सभापति और देश के उपराष्ट्रपति को एक याचिका भेजी है। इस याचिका में अनुरोध किया गया है कि संविधान की 10वीं अनुसूची के नियमों के मुताबिक इन सातों सदस्यों की सदस्यता पूरी तरह से समाप्त की जाए। मैंने उपराष्ट्रपति (सभापति) महोदय से मांग की है कि वे इसकी जल्द से जल्द सुनवाई करें और अपनी ओर से एक न्यायपूर्ण फैसला दें।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निवेशकों को समझाया नये उत्तर प्रदेश का मतलब, भरोसा देते हुए 17 फार्मा कंपनियों को दिया एलओसी

(जीएनएस)।

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश की औद्योगिक रफ्तार को गति देने के क्रम में रविवार को 17 फॉर्मा कंपनियों को लेटर ऑफ कम्फर्ट (एलओसी) प्रदान किया। इनमें से अधिकांश कंपनियों ने बीते दिनों लखनऊ में हुए फॉर्मा कॉन्क्लेव में भाग लिया था।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सरकारी आवास पर आयोजित कार्यक्रम में फॉर्मा कंपनियों को लेटर ऑफ कम्फर्ट प्रदान करने के साथ निवेशकों को सफलतम निवेश की शुभकामना दी और कहा कि आज का दिन प्रदेश के औद्योगिक व स्वास्थ्य सेवा के लिए ऐतिहासिक पड़ाव है।

मुख्यमंत्री ने निवेशकों को विश्वास दिलाया कि उत्तर प्रदेश में सेफ्टी, स्टेबिलिटी व स्पीड की गारंटी है। प्रदेश अब ट्रस्ट व टाइमली डिलीवरी के लिए पहचाना जा रहा है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि उत्तर प्रदेश हर रिलायबल पॉलिसी पार्टनर के साथ खड़ा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में नए भारत का दर्शन हो रहा है।

स्किल्ड/अनस्किल्ड युवाओं को रोजगार

देश की अर्थव्यवस्था ने नई ऊंचाइयों को प्राप्त किया है। हम 200 देशों को सस्ती व गुणवत्तापरक दवाइयां उपलब्ध करा रहे हैं। फॉर्मा कॉन्क्लेव ने ग्लोबल हेल्थटेक के मैप पर उत्तर प्रदेश को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। उन्होंने निवेशकों से कहा कि आपका निवेश केवल फॉर्मा/मेडिकल डिवाइस के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि प्रदेश की 25 करोड़ जनता के विश्वास के साथ जुड़ा है। लगभग 2000 करोड़ का निवेश रिसर्च एवं डवलपमेंट में उत्तर प्रदेश को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में सहायता करेगा। इस निवेश से उत्तर प्रदेश के 10 हजार से अधिक स्किल्ड/अनस्किल्ड युवाओं को रोजगार मिलेगा।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सभी के सामूहिक प्रयासों का परिणाम धरातल पर दिखाई दे रहा है। यूपी में निवेश से नई संभावनाएं पैदा हुई हैं। नौ वर्ष में सरकार की स्पष्ट नीति व साफ नीयत के कारण उत्तर प्रदेश बीमारू राज्य से निकलकर देश का ग्रोथ इंजन बना है। यूपी का जीएसडीपी बढ़कर 36 लाख करोड़ हो गया है।

यूपी बड़ा मार्केट, माहौल उद्योगों के अनुकूल

उन्होंने निवेशकों से कहा कि यूपी बड़ा मार्केट है। यहां का माहौल उद्योगों के अनुकूल है। यहां पर्याप्त लैंडबैंक है। यूपी में हर सेक्टर में कार्य करने वाला वर्कफोर्स उपलब्ध है। यहां का 56 फीसदी वर्कफोर्स युवा है। इन युवाओं को स्किल, इनोवेशन व टेक्नोलॉजी से जोड़कर मार्केट की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया गया है। प्रदेश में वर्तमान में 21 हजार से अधिक स्टार्टअप कार्य कर रहे हैं।

विकास की पहली शर्त कानून व्यवस्था

मुख्यमंत्री ने निवेशकों से कहा कि विकास की पहली शर्त कानून व्यवस्था है। 2017 के पश्चात यूपी की सुदृढ़ कानून व्यवस्था से देश-दुनिया परिचित है। प्रदेश अब पॉलिसी पैरालिसिस से निकलकर पॉलिसी स्टेबिलिटी तक पहुंच गया है। यहां 34 से अधिक सेक्टोरल पॉलिसी है। निवेश मित्र, निवेश सारथी, उद्यमी मित्र उद्यमियों के लिए अनुकूल वातावरण

सम्पादकीय

डगमगाया आप का राज्यसभा किला वजह रही राघव चड्ढा सहित 7 सांसदों का भाजपा में जाना

राघव का घातक वार और सात सांसदों की बगावत से डगमगाया 'आप' का राज्यसभा किला, भारतीय राजनीति का यह शुव्रवार आम आदमी पाटा के इतिहास में हमेशा एक ऐसे मोड़ के रूप में याद किया जाएगा, जहां से वापसी का रास्ता बहुत धुंधला नजर आता है। राघव का घातक वार और सात सांसदों की बगावत से डगमगाया 'आप' का राज्यसभा किला भारतीय राजनीति के फलक पर 2 अप्रैल 2026 को जो चिगारी सुलगनी शुरू हुई थी, उसने 22 दिनों के भीतर एक ऐसी सियासी आग का रूप ले लिया है जिसमें अरविद केजरीवाल की आम आदमी पाटा का राज्यसभा वाला किला लगभग ढह चुका है। यह महज वुछ सांसदों का दल-बदल नहीं है, बल्कि उस भरोसे और विचारधारा की सामूहिक हत्या है, जिसके दम पर एक दशक पहले अन्ना आंदोलन की कोख से यह पाटा जन्मी थी। राज्यसभा में पाटा के डिप्टी लीडर रहे राघव चड्ढा की अगुवाई में सात सांसदों का एक साथ पाला बदलना दिल्ली से लेकर पंजाब तक की सियासत में वो भूवंप है, जिसकी रिक्टर स्केल पर तीव्रता आने वाले कई सालों तक महसूस की जाएगी। मैं घायल हूं, इसलिए घातक हूं और मेरी खामोशी को मेरी हार मत समझना जैसे फिल्मी लगने वाले राघव के संवादों ने शुव्रवार को तब हकीकत का जामा पहन लिया, जब उन्होंने संदीप पाठक और अशोक मित्तल के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस कर भाजपा का दामन थामने का एलान किया। यह भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में किसी भी क्षेत्रीय दल के लिए संभवतः सबसे बड़ा और संगठित विद्रोह है। इस पूरे घटनाव्रम की पटकथा उस दिन लिख दी गई थी जब राघव चड्ढा को अचानक राज्यसभा में डिप्टी लीडर के पद से हाथ धोना पड़ा था। पाटा ने अंदरूनी तौर पर उन पर निष्व्रियता और गतिविधियों से दूरी बनाने के आरोप मढ़े थे, लेकिन राघव के तेवर बता रहे थे कि वे किसी बड़े ऑपरेशन की तैयारी में हैं। गौर करने वाली बात यह है कि इस बगावत में संदीप पाठक का नाम शामिल होना केजरीवाल के लिए सबसे बड़ा व्यक्तिगत झटका है। पाठक वही शख्स हैं जिन्हें आप का चाणक्य कहा जाता था, जिन्होंने पंजाब की सत्ता की चाबी केजरीवाल के हाथ में सौंपी और पाटा को राष्ट्रीय दल का दर्जा दिलाने के लिए पर्दे के पीछे से संगठन की मशीनरी तैयार की। जब संगठन का वास्तुकार ही इमारत ढहाने पर आमादा हो जाए, तो नेतृत्व की विफलता पर सवाल उठना लाजिमी है। इसके साथ ही स्वाति मालीवाल की भूमिका ने इस आग में घी का काम किया है। बिभव वुमार मामले के बाद जिस तरह स्वाति को अपनी ही पाटा में अपमान और अलगाव का सामना करना पड़ा, उन्होंने उसे अपनी निजी अदावत बना लिया। आज जब वे राघव के साथ सुर में सुर मिला रही हैं तो यह साफ है कि आप के भीतर महिलाओं के सम्मान और आंतरिक लोकतंत्र को लेकर जो दावे किए जाते थे, उनकी कलई खुल चुकी है। तकनीकी तौर पर देखें तो यह बगावत बहुत ही सधे हुए कानूनी दांव-पेच के साथ की गई है। राज्यसभा में आप के वुल 10 सांसद थे, जिनमें से 7 का एक साथ अलग होना दल-बदल विरोधी कानून (एन्टी डिफेक्शन लॉ) के तहत अयोग्यता की तलवार को वुंद कर देता है। दोतिहाई की यह संख्या राघव चड्ढा की उस रणनीतिक वुशलता को दशार्ती है, जिसका लोहा कभी खुद केजरीवाल मानते थे। राघव का यह कहना कि वे गलत पाटा में सही व्यक्ति थे, न केवल केजरीवाल के नेतृत्व पर सीधा प्रहार है, बल्कि उन लाखों कार्यकताओं के जख्मों पर नमक छिड़कने जैसा है जो भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग का सपना लेकर इस पाटा से जुड़े थे। जिस पाटा ने 15 साल तक संघर्ष किया, उसका इस तरह ताश के पत्तों की तरह बिखरना यह बताता है कि सत्ता के गलियारों में पहुंचते ही आम और खास की लकीर धुंधली पड़ गईं। भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे नेतृत्व और जेल से सरकार चलाने की जिद ने शायद उन नेताओं को भी सोचने पर मजबूर कर दिया जो अब तक वफादारी का दम भर रहे थे। पंजाब की सियासत के लिहाज से यह घटनाव्रम किसी सुनामी से कम नहीं है। बागी होने वाले सात में से छह सांसद पंजाब का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुख्यमंत्री भगवंत मान के लिए यह स्थिति बेहद असहज है, क्योंकि राघव चड्ढा को कभी पंजाब सरकार का रिमोट वंट्रोल कहा जाता था। मान और चड्ढा के बीच का शीतयुद्ध जगजाहिर था, लेकिन अब यह आमने-सामने की जंग में बदल चुका है। भाजपा ने इन चेहरों को अपने पाले में कर न केवल राज्यसभा में अपनी ताकत 148 तक पहुंचा दी है, बल्कि 2027 के पंजाब विधानसभा चुनाव के लिए भी एक मजबूत बिसात बिछा दी है। भाजपा, जो पंजाब में लंबे समय से एक मजबूत सिख चेहरे और संगठन की तलाश में थी, उसे अब हरभजन सिह, अशोक मित्तल और विव्रमजीत सिह साहनी जैसे रसूखदार लोगों का साथ मिल गया है। यह मिशन पंजाब की वो शुरूआत है जिसने अरविद केजरीवाल के राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं को फिलहाल दिल्ली और पंजाब की सीमाओं में ही वैद कर दिया है। संजय सिह और अन्य आप नेता इसे ऑपरेशन लोटस और वेंद्रीय एजेंसियों का डर बताकर जनता की सहानुभूति बटोरने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या केवल डर के दम पर इतने बड़े स्तर पर बगावत संभव है? अन्ना हजारे की उस टिप्पणी को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता जिसमें उन्होंने कहा कि जब स्वार्थ समाज और देश से ऊपर हो जाता है, तो संगठन टूट जाते हैं। यह केजरीवाल की उस कार्यशैली का भी परिणाम है जिसमें उन्होंने धीरे-धीरे उन सभी पुराने चेहरों को किनारे कर दिया जिन्होंने उनके साथ धूल फांकी थी। योगेंद्र यादव, प्रशांत भूषण, वुमार विश्वास और अब राघव-संदीप की यह फेहरिस्त बताती है कि पाटा में असहमति के लिए कोई जगह नहीं बची है। स्वाति मालीवाल का यह आरोप कि उन्हें मुख्यमंत्री के घर पर पीटा गया और फिर उन्हें ही बदनाम करने की कोशिश की गईं, पाटा की नैतिक साख पर वो धब्बा है जो शायद ही कभी धुल पाए। राज्यसभा सचिवालय में अब कानूनी लड़ाई शुरू होगी, सदस्यता रद्द करने की याचिकाएं डाली जाएंगी और मामला कोर्ट तक जाएगा। लेकिन राजनीति में जो धारणा (परसेप्शन) एक बार बन जाती है, उसे बदलना मुश्किल होता है। जनता के बीच अब यह संदेश जा चुका है कि जो पाटा दूसरों को ईंमानदारी का स्रटिफिकेट बांटती थी, उसके अपने घर में ही भारी अविश्वास का माहौल है।

टीएमसी के 'मांस-मछली प्रतिबंध' वाले दावों के बीच पीएम मोदी ने कालीबाड़ी के किए दर्शन, जहां चढ़ता है नॉनवेज प्रसाद

(जीएनएस)।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोलकाता के ऐतिहासिक थंथानिया कालीबाड़ी मंदिर में पूजा-अर्चना की। अपनी अनोखी मांसाहारी भोग परंपरा के लिए प्रसिद्ध इस मंदिर का दौरा राज्य में भोजन संस्कृति पर चल रही राजनीतिक बहस के बीच हुआ।

पीएम मोदी ने उत्तर कोलकाता में अपने रोड शो से पूर्व रविवार को मंदिर के दर्शन किए। पश्चिम बंगाल में मांसाहारी भोजन पर जारी राजनीतिक गरमागरमी के कारण यह यात्रा महत्वपूर्ण रही। इससे पूर्व, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी सहित तृणमूल कांग्रेस नेताओं ने आरोप लगाया कि भाजपा सत्ता में आने पर राज्य की भोजन संस्कृति में हस्तक्षेप कर सकती है।

टीएमसी ने क्या किया था दावा?

टीएमसी नेताओं ने बिहार और गुजरात जैसे भाजपा-शासित राज्यों में त्योहारों के दौरान मछली व मांस की बिक्री पर लगे प्रतिबंधों का हवाला दिया था। बनर्जी ने ऐसी नीतियों को बंगाल की सांस्कृतिक पहचान की समझ की कमी बताया।

भाजपा बोलीं- हमारी सरकार नॉनवेज पर नहीं लगाएगी रोक

भाजपा ने इन आरोपों को सिरे से खारिज किया। प्रदेश अध्यक्ष सामिक भट्टाचार्य और केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार ने स्पष्ट किया कि मांसाहारी भोजन पर प्रतिबंध की कोई योजना नहीं, व लोगों की खान-पान संबंधी पसंदों का सम्मान किया जाएगा।

इस विवाद पर भाजपा नेता और नागालैंड के मंत्री तेमजेन इम्ना अलॉन्ग ने मांस खाते हुए एक वीडियो साझा किया। उन्होंने लिखा, "ममता दीदी, मैं भाजपा में हूं और शौक से मांसाहारी हूं।" यह

प्रतिक्रिया भाजपा के स्टैंड के अनुरूप थी।

अनुराग ठाकुर समेत भाजपा नेताओं ने खाया था माछ-भात

पश्चिम बंगाल चुनाव के पहले चरण के प्रचार के अंतिम दिन, अनुराग ठाकुर सहित भाजपा नेताओं ने मछली और चावल (माछ भात) खाकर ममता बनर्जी के आरोपों का जवाब दिया। यह कदम उनके इस दावे का खंडन करने का प्रयास था कि भाजपा सत्ता में आने पर मछली पर प्रतिबंध लगाएगी।

पीएम मोदी ने मां काली की विधिवत पूजा

प्रधानमंत्री मोदी के दौरे पर मंदिर के मुख्य पुजारी गुणासेंदु भट्टाचार्य ने खुशी जताई। उन्होंने बताया, "प्रधानमंत्री यहाँ आए, देवी को माला व प्रसाद चढ़ाकर पूजा की। वे कुछ देर बैठकर माँ की आरती करते रहे।" भट्टाचार्य ने आगे कहा, "मैंने उन्हें मंदिर के शानदार इतिहास से अवगत कराया और उन्होंने उसे धैर्यपूर्वक सुना। क्या प्रार्थनाएं कीं, यह मुझे नहीं पता, किंतु विश्वास है कि उन्होंने देश के कल्याण के लिए ही कामना की होगी।"

कोलकाता का कालीबाड़ी मंदिर में भक्तों की है अटूट श्रद्धा

थंथानिया कालीबाड़ी कोलकाता के सबसे प्राचीन व प्रतिष्ठित काली मंदिरों में से एक है। 1703 में स्थापित, इसका 300 से अधिक वर्षों का गौरवशाली इतिहास है, जो शहर के वर्तमान स्वरूप से भी पुराना है। यहाँ माँ सिद्धेश्वरी की पूजा की जाती है, जिन्हें 'जाग्रत' देवी माना जाता है। मंदिर समिति के सदस्य पलाश घोष ने बताया हम मंदिर से जुड़ी नौवीं पीढ़ी हैं, यह हमारे लिए एक ऐतिहासिक अवसर है।"

कालीबाड़ी में चढ़ता है मांसाहारी प्रसाद?

यह मंदिर देवी को मांसाहारी प्रसाद चढ़ाने की अपनी दुर्लभ प्रथा के लिए विख्यात है। माना जाता है कि इसकी शुरूआत रामकृष्ण परमहंस ने की थी, जिन्होंने ब्रह्मानंद केशव चंद्र सेन के स्वास्थ्य लाभ हेतु प्रार्थना करते हुए 'डाब-चिंगड़ी' का भोग लगाया था। यह परंपरा तब से लगातार निभाई जा रही है।

कालीबाड़ी मंदिर में क्यों चढ़ता है नॉनवेज प्रसाद?

रामकृष्णदेव जब श्यामापुकुर में बीमार थे, तब भी श्रद्धालुओं ने इसी प्रथा का पालन करते हुए मांसाहारी प्रसाद के साथ प्रार्थनाएं की थीं। यह मंदिर रामकृष्ण परमहंस से गहराई से जुड़ा है, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे अक्सर यहाँ आते थे और भक्ति गीत गाया करते थे। मंदिर की दीवारों पर उनकी एक प्रसिद्ध पंक्ति लिखा है: "शंकरेर हृदय माझें, काली बिराजे" (माँ काली शंकर के ùQ¹f में वास करती हैं)।

ब्रिटिश मौलाना शमसुल हुदा खान कौन है, जिसके मदरसे पर चला सीएम योगी का बुलडोजर? पाकिस्तान कनेक्शन-विदेशी फंडिंग

उत्तर प्रदेश के संतकबीरनगर के खलीलाबाद स्थित गोश्त मंडी में यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ सरकार की बुलडोजर कार्रवाई कथित अवैध मदरसे पर हुई। भारी पुलिस बल और कड़ी सुरक्षा के बीच ब्रिटिश मौलाना शमसुल हुदा खान के कथित अवैध मदरसे पर बुलडोजर चल पड़ा। 6 बुलडोजर, 2 पोकलैंड मशीनें और करीब 100 पुलिसकर्मी (30 महिला सिपाही समेत) मौके पर तैनात। दो बुलडोजर के ब्लेड टूट गए, एक मशीन खराब हो गई, फिर भी 3 पिलर गिर चुके हैं। अब 45 से ज्यादा पिलर बाकी। तीन मंजिला इमारत (640 वर्ग मीटर, 25 कमरे, 5 करोड़ की लागत) को पूरी तरह ध्वस्त करने की कार्रवाई जारी है।

यह मदरसा 'कुलियातुल बनातिर रजबिया' नाम से जाना जाता था। 2024 में बंद होने से पहले यहां 400 बच्चे (ज्यादातर लड़कियां) पढ़ते थे। उट योगी आदित्यनाथ सरकार की सख्ती का यह नया उदाहरण है। लेकिन सवाल उठता है कि ब्रिटिश मौलाना शमसुल हुदा खान आखिर कौन है? पाकिस्तान से उसका कनेक्शन क्या? विदेशी फंडिंग का रैकेट कैसे चला? आइए पूरी कहानी विस्तार से समझते हैं...

आजमगढ़ से ब्रिटेन तक का सफर

शमसुल हुदा खान का जन्म 12 जुलाई 1984 को संतकबीरनगर जिले के देवरिया लाला गांव (दुधारा थाना) में हुआ। मूल रूप से आजमगढ़ का रहने वाला। 2007 में वह ब्रिटेन चला गया। 2013 में ब्रिटिश नागरिकता हासिल कर ली। लेकिन भारत से नाता नहीं टूटा।

वह 2007 से 2017 तक आजमगढ़ के 'दारुल उलूम अहले सुन्नत मदरसा अशरफिया मिस्बाहुल उलूम' में सहायक अध्यापक के पद पर था। ब्रिटेन में रहते हुए भी उसने 31 जुलाई 2017 तक सरकारी वेतन लिया - कुल 16 लाख रुपये से ज्यादा। अनियमित मेडिकल लीव, श्फ्र (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति) और यहां तक कि जीपीएफ-पेंशन का फायदा भी लिया। ब्रिटिश नागरिक होने के बावजूद यह सब कैसे? अल्पसंख्यक कल्याण विभाग की मिलीभगत का आरोप। करीब 5 महीने पहले मामले के सामने आने पर विभाग के 4 अधिकारियों को निलंबित किया गया, संयुक्त निदेशक एसएन पांडे, गाजियाबाद उ्टड साहित्य निकष सिंह, बरेली के लालमन और अमेठी के प्रभात कुमार।

2017 में वह भारत छोड़कर ब्रिटेन चला गया। लेकिन परिवार खलीलाबाद में ही है कि पत्नी सकलैन खातून, बेटा तौसीफ रजा और बहू नसरीन। मौलाना खुद ब्रिटेन में रहता है, लेकिन भारत में मदरसों और NGO के जरिए सक्रिय था।

सरकारी जमीन पर 5 करोड़ का निर्माण

मदरसा खलीलाबाद (UP इ४''ड्डिशेी१ ड्ड''ु ि टर्शि२) तहसील के खलीलाबाद गांव (मोतीनगर मोहल्ला, गाटा संख्या 154) पर बना। 640 वर्ग मीटर (करीब 7000 वर्ग फीट) सरकारी जमीन पर। नक्शा पास नहीं, मंजूरी नहीं। 2024 में गांव निवासी अब्दुल हकीम ने रुस्ट कोर्ट में

शिकायत की। नवंबर 2025 में रुस्ट कोर्ट ने ध्वस्तीकरण का आदेश दिया। मदरसा कमेटी ने DM और कमिश्नर कोर्ट में अपील की, लेकिन 25 अप्रैल 2026 को बस्ती मंडल कमिश्नर ने अपील खारिज कर दी। कोई केस लंबित नहीं बचा, इसलिए रविवार को कार्रवाई शुरू।

SD M हृदय राम तिवारी ने कहा, 'जमीन सरकारी में मिला दी गई थी। निर्माण पूरी तरह अवैध था।' अतिरिक्त DM जय प्रकाश और उड प्रियम राजशेखर मौके पर मौजूद।

विदेशी फंडिंग का रैकेट और पाकिस्तान कनेक्शन

एजेंसियों (ATS, ED) की जांच में चौंकाने वाले खुलासेः

NGO 'राजा फाउंडेशन' के जरिए विदेशी फंडिंग। अलग-अलग मदरसों में पैसे भेजे गए। व्यक्तिगत बैंक खातों का भी इस्तेमाल।

ED का PMLA केस (दिसंबर 2025): मनी लॉन्ड्रिंग का आरोप। विदेशी मुद्रा अधिनियम का उल्लंघन।

ATS जांचः 2007 से संदिग्ध गतिविधियां। पाकिस्तान के कई शहरों का दौरा। वहां के मौलवियों और संगठनों से संपर्क। जम्मू-कश्मीर के अलगाववादी नेताओं से भी कनेक्शन।

दावत-ए-इस्लामीः पाकिस्तान का कट्टरपंथी संगठन। मौलाना इसके सदस्य माने जाते हैं। भारत में इस्लामी प्रचार के नाम पर कट्टरपंथ फैलाने का आरोप।

वढ पुलिस ने उसके खिलाफ 3 FIR दर्ज कीं:

संतकबीरनगर (खलीलाबाद कोतवाली, 2 नवंबर 2024): धोखाधड़ी, विदेशी मुद्रा अधिनियम उल्लंघन, अवैध आर्थिक लाभ, आपराधिक साजिश।

आजमगढ़ः धोखाधड़ी और आर्थिक गड़बड़ी।

तीसरा केसः विदेशी फंडिंग और संदिग्ध गतिविधियां।

पहले दो मामलों में चार्जशीट दाखिल हो चुकी है।

मदरसा 2024 में पहली बार सील हुआ। मौलाना ने पास की बाउंड्री में दूसरा मदरसा खोल लिया। नवंबर 2025 में वह भी सील। एक मकान में गर्ल्स हॉस्टल भी चलाता था - संतकबीरनगर, बस्ती, आजमगढ़ समेत कई जिलों की लड़कियां रहती थीं।

Yogi Gover»»fme»»ft का सख्त रुखः क्यों चला बुलडोजर?

UP में CM योगी आदित्यनाथ सरकार अवैध निर्माण, विदेशी फंडिंग और कट्टरपंथ पर जीरो टॉलरेंस बरत रही है। यह कार्रवाई सिर्फ एक मदरसे की नहीं - अवैध मदरसों, फर्जी फंडिंग और रेडिकलाइजेशन के खिलाफ बड़ी मुहिम का हिस्सा है। प्रशासन का कहना है कि मदरसा 2024 से बंद था, लेकिन इमारत खड़ी रखकर फंडिंग का नेटवर्क चल रहा था।

कार्रवाई के दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम। PAC की दो कंपनियां तैनात। स्थानीय लोग चुपचाप देख रहे हैं। मदरसा कमेटी अब कोई कानूनी रास्ता नहीं बचा पाई।

बड़े सवाल और मायने

विदेशी फंडिंग का खतराः भारत में मदरसों में विदेशी पैसा आने से कट्टरपंथ फैलने का खतरा। एऊ-अळर की जांच में ऐसे कई नेटवर्क सामने आए हैं।

सरकारी सैलरी घोटालाः ब्रिटिश नागरिक सरकारी वेतन ले - यह सरकारी खजाने के साथ धोखा। 4 अधिकारियों का निलंबन सिर्फ शुरूआत।

पाकिस्तान कनेक्शनः दावत-ए-इस्लामी जैसे संगठनों से लिंक। भारत की सुरक्षा के लिए चिंता का विषय।

मदरसा सुधारः वढ सरकार मदरसों का सर्वे करा रही है। पाठ्यक्रम आधुनिक बनाने और फंडिंग की पारदर्शिता पर जोर।

यह मामला सिर्फ एक इमारत गिराने का नहीं। यह दिखाता है कि वढ में अवैध निर्माण, फर्जी फंडिंग और संदिग्ध गतिविधियों पर सरकार की नजर कितनी पैनी है। मौलाना ब्रिटेन में है, लेकिन उसका नेटवर्क भारत में था। एऊ-अळर की जांच आगे बढ़ रही है। परिवार अभी खलीलाबाद में है।

बुलडोजर एक्शन ने एक बार फिर साबित किया कि कानून के राज में कोई भी ऊपर नहीं। शमसुल हुदा खान का केस विदेशी फंडिंग, पाकिस्तान लिंक और सरकारी धोखाधड़ी का मिसाल बन गया है। अब देखना होगा कि जांच में और कितने बड़े खुलासे होते हैं। क्या ब्रिटेन से प्रत्यर्पण की प्रक्रिया शुरू होगी? क्या मदरसा शिक्षा में बड़े सुधार आएंगे?

एमपी बाबा बलवीर सिंह सीचेवाल? जिन्होंने केजरीवाल को नहीं दिया धोखा, आप टूट के बीच क्यों नहीं गए भाजपा में?

(जीएनएस)।

आम आदमी पार्टी (AAP) के लिए हालिया राजनीतिक घटनाक्रम किसी बड़े झटके से कम नहीं रहा। पार्टी के कई राज्यसभा सांसदों के एक साथ अलग होने की खबरों ने पंजाब की राजनीति को हिला दिया। अअढ के इतिहास की सबसे बड़ी बगावत के बीच एक ऐसा नाम निखरकर सामने आया है, जिसने सत्ता के लालच और दबाव के आगे झुकने से साफ इनकार कर दिया। हम बात कर रहे हैं पद्मश्री बाबा बलवीर सिंह सीचेवाल की।

जहां राघव चड्ढा की अगुवाई में पंजाब के 6 और दिल्ली की 1 सांसद (स्वाति मालीवाल) ने पाला बदलकर बीजेपी का दामन थाम लिया, वहीं बाबा सीचेवाल आज राज्यसभा में पंजाब से 'आप' के इकलौते और वफादार सिपाही बनकर खड़े हैं। राजनीतिक हलकों में सवाल उठ रहा है कि आखिर बाबा सीचेवाल कौन हैं, क्यों उन्हें बाकी सांसदों की तरह सत्ता या समीकरणों ने प्रभावित नहीं किया, और क्यों उन्होंने पार्टी छोड़ने के बजाय अपने रास्ते पर टिके रहने का फैसला किया।

बाबा बलबीर सिंह सीचेवाल पंजाब के जाने-माने पर्यावरणविद्, समाजसेवी और आध्यात्मिक व्यक्तित्व हैं। उनका जन्म 2 फरवरी 1962 को पंजाब के जालंधर जिले के सीचेवाल गांव में हुआ था। किसान परिवार से आने वाले सीचेवाल ने राजनीति से पहले सामाजिक बदलाव को अपना मिशन बनाया।

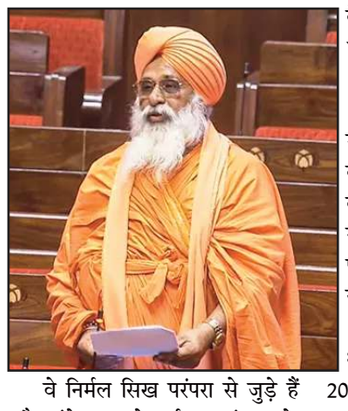

वे निर्मल सिख परंपरा से जुड़े हैं और लंबे समय से पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करते रहे हैं। पंजाब में उनका नाम किसी राजनीतिक नेता से ज्यादा एक सामाजिक आंदोलनकारी के रूप में लिया जाता है।

बाबा बलबीर सिंह सीचेवाल के जीवन के कुछ प्रमुख पहलू:

◆काली बेईं का पुनरुद्धारः उन्होंने 160 किलोमीटर लंबी 'काली बेईं' नदी को अकेले दम पर साफ करने का बीड़ा उठाया था, जो कभी गंदा नाला बन चुकी थी। यह वही पवित्र स्थान है जहाँ गुरु नानक देव जी को ज्ञान प्राप्त हुआ था।

◆पद्मश्री सम्मानः पर्यावरण के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए साल 2017 में उन्हें तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने 'पद्मश्री' से सम्मानित किया था।

◆इको-बाबा : फेमस टाइम मैगजीन ने उन्हें 'हीरोज ऑफ एनवायरनमेंट' की सूची में शामिल किया था।

◆मानवतावादी कार्यः उन्होंने अरब देशों में फंसी पंजाबी महिलाओं और युवाओं को मानव तस्करी के चंगुल से छुड़ाकर वापस लाने में अहम भूमिका निभाई है।

बाबा सीचेवाल को सबसे ज्यादा पहचान मिली काली बेईं नदी की सफाई मुहिम से। यह नदी कभी प्रदूषण और गंदगी का प्रतीक बन चुकी थी। आसपास के गांवों और शहरों का गंदा पानी इसमें गिरता था और नदी लगभग नाले में बदल चुकी थी। साल 2000 में बाबा सीचेवाल ने इस नदी को पुनर्जीवित करने का अभियान शुरू किया। उन्होंने सरकारी मदद का इंतजार नहीं किया। गांव-गांव जाकर लोगों को जोड़ा और सफाई अभियान चलाया।

धीरे-धीरे हजारों लोग इस मिशन से जुड़े और लगभग 160 किलोमीटर लंबी नदी की सफाई का बड़ा काम शुरू हुआ। आज यह नदी पंजाब में पर्यावरण संरक्षण की मिसाल मानी जाती है।

बाबा बलबीर सिंह सीचेवाल के काम को सिर्फ पंजाब तक सीमित पहचान नहीं मिली। उन्हें वर्ष 2017 में भारत सरकार की ओर से पद्मश्री सम्मान दिया गया।

इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उनके काम की चर्चा हुई। ढ्ढी टॅ९ल्ली ने उन्हें पर्यावरण के क्षेत्र में दुनिया के चुनिंदा नायकों में शामिल किया। यह सम्मान उन्हें काली बेईं नदी के पुनर्जीवन और सामुदायिक भागीदारी के जरिए पर्यावरण सुधार के लिए मिला।

पंजाब से राज्यसभा भेजे गए अअढ सांसदों में हालिया बदलाव के बाद बाबा बलबीर सिंह सीचेवाल अब पार्टी के इकलौते सांसद बचे हैं। जिन नेताओं ने पार्टी छोड़ी, उनमें कई बड़े राजनीतिक चेहरे शामिल थे। लेकिन सीचेवाल ने न केवल दूरी बनाए रखी, बल्कि संकेत दिया कि उनकी राजनीति व्यक्तिगत लाभ से नहीं, बल्कि सामाजिक काम से जुड़ी है।

उनका राज्यसभा कार्यकाल 5 जुलाई 2028 तक है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि ऐसे समय में पार्टी के साथ बने रहना सिर्फ रणनीतिक फैसला नहीं, बल्कि व्यक्तिगत विचारधारा का भी संकेत है।

बाबा सीचेवाल का खुलासा-बगावत के लिए आया था फोन

बाबा सीचेवाल ने हाल ही में खुलासा किया कि उन्हें इस बड़ी टूट का हिस्सा बनने के लिए सीधा प्रस्ताव मिला था। उन्होंने बताया कि सांसद विक्रमजीत सिंह साहनी ने उन्हें फोन किया था। साहनी ने उनसे कहा कि वे एक स्वतंत्र गुट बना रहे हैं और कई सांसदों ने इस पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। साहनी चाहते थे कि बाबा सीचेवाल भी उस लिस्ट में अपना नाम जोड़ लें। लेकिन बाबा ने दोटूक जवाब देते हुए कहा, "नहीं, मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं है।"

साहनी ने उन्हें झांसा देने की कोशिश की और कहा कि 'यूनिवर्सिटी वाले' (लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी के संस्थापक अशोक मित्तल) ने भी साइन कर दिए हैं। लेकिन बाबा सीचेवाल अपनी जगह से नहीं डिगे। उन्होंने साफ कर दिया कि वे किसी पद के लालची नहीं हैं।

इतना ही नहीं, बागी गुट ने बाबा सीचेवाल को अपने पाले में करने के लिए 'सॉफ्ट पावर' का भी इस्तेमाल किया था।

साकिब और वैभव जैसे सितारे तराशने वाले रॉबिन सिंह की कहानी, जब जुनून के आगे फीका पड़ा मेडिकल करियर

(जीएनएस)।

बिहार क्रिकेट लंबे समय के बाद ऊपर आया है और एक साथ कई खिलाड़ी भारत को दिए हैं। इन सबके बीच पर्दे के पीछे काम करने वाले रॉबिन सिंह ने अपने प्रदेश की प्रतिभाओं को तराशने में अहम भूमिका निभाई है, जिनके बारे में कम ही लोगों को पता होगा।

चिकित्सा की दुनिया में एक सम्मानजनक और स्थिर जीवन रॉबिन सिंह का इंतजार कर रहा था, उनको उसी फील्ड में जाना था। वह हैदराबाद में रहते थे, रॉबिन की नजरें मेडिकल की किताबों या अस्पताल की गलियारों के बजाय बिहार की उन धूल भरी पिचों पर टिकी थीं, जहां क्रिकेट संसाधनों के अभाव में भी केवल जिद के दम पर जिंदा था।

बिहार के क्रिकेट का इतिहास संघर्षों से भरा रहा है। एक समय था जब मुंबई और दिल्ली जैसी टीमें अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार करने वाली मशीन बनी हुई थीं, वहीं बिहार प्रशासनिक उलझनों और बुनियादी ढांचे की कमी के कारण गुमनामी में खोया था।

महेंद्र सिंह धोनी जैसे दिग्गज को भी अपनी पहचान बनाने के लिए बिहार से झारखंड का रुख करना पड़ा था। लगभग अठारह वर्षों तक बिहार ने रणजी ट्रॉफी तक नहीं खेली। पटना या समस्तीपुर के मैदानों पर पसीना बहाने वाले युवाओं के लिए सपना देखना किसी जोखिम से कम नहीं था। या तो वे दूसरे राज्यों के लिए खेलने को मजबूर थे या फिर उनका टैलेंट दोपहर की चिलचिलाती धूप में दम तोड़ देता था।

एक कठिन चुनाव और जुनून की जीत

इसी अंधकार के बीच रॉबिन सिंह ने एक बड़ा फैसला लिया। उन्होंने अपने मेधावी छात्र होने के रिकॉर्ड और मेडिकल की पढ़ाई को पीछे छोड़कर कोचिंग और स्काउटिंग की दुनिया में कदम रखा। उनके पिता जो खुद एक प्रोफेसर थे, इस फैसले से बेहद आहत थे और उन्होंने लंबे समय तक रॉबिन से बात नहीं की। रॉबिन ने हैदराबाद में क्रिकेट की बारीकियों और वहां के सिस्टम को करीब से देखा था। उन्होंने समझा कि एक गली के क्रिकेटर और आईपीएल स्टार के बीच का फासला केवल पेशेवर कोचिंग और सही मार्गदर्शन का होता है।

अभावों के बीच उम्मीद की नई बुनियाद

2017 में जब वे एक पारिवारिक शादी के सिलसिले में बिहार आए, तो नियति ने उन्हें वहीं रोक लिया। बिहार क्रिकेट एसोसिएशन के पास उस वक्त फंड नहीं था, फिर भी रॉबिन ने बिना वेतन के अंडर-16 टीम को कोचिंग देने की जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने देखा कि बच्चों के पास क्रिकेट किट और यूनिफॉर्म तक नहीं है। हार मानने के बजाय उन्होंने अपने पुराने मेडिकल दोस्तों से स्पॉन्सरशिप जुटाई और पहली बार बिहार की युवा टीम को एक पेशेवर पहचान दी। उन्होंने खेल की तकनीक के साथ-साथ खिलाड़ियों के शारीरिक और मानसिक विकास पर भी काम करना शुरू किया।

मिट्टी से निकले हीरे और रॉबिन की पारखी नजर

रॉबिन की सबसे बड़ी खोजों में साकिब हुसैन और वैभव सूर्यवंशी जैसे नाम शामिल हैं। साकिब जो कभी चंद रुपयों के लिए टेनिस बॉल क्रिकेट खेलते थे, आज अपनी 145 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से आईपीएल में बल्लेबाजों को डराते हैं। वहीं वैभव सूर्यवंशी ने 2025 में सबसे कम उम्र में आईपीएल डेब्यू और शतक लगाकर पूरी दुनिया को हैरान कर दिया। रॉबिन ने केवल प्रतिभा नहीं खोजी, बल्कि उन्होंने खिलाड़ियों की मानसिकता और उनके खेल की तकनीक पर आधुनिक विज्ञान के साथ काम किया।

नई पहचान और भविष्य की फैक्ट्री

आज बिहार अब केवल एक पिछड़ा हुआ राज्य नहीं, बल्कि क्रिकेट की एक नई फैक्ट्री बनकर उभर रहा है। रॉबिन सिंह वर्तमान में जियोहॉटस्टार पर भोजपुरी कमेंट्री के माध्यम से क्रिकेट को घर-घर तक पहुंचा रहे हैं, लेकिन उनकी असली पहचान आज भी उन्हीं धूल भरे मैदानों में है जहां वे फटे हुए जूतों और बड़ी आंखों वाले बच्चों को उनके सपनों की मंजिल तक पहुंचाते हैं।

RNI No.: UPHIN/25/A1697 Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh.
and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : ASHWANI KUMAR
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री श्रीमती ममता बनर्जी द्वारा चुनावी रैली में 'चमार' शब्द के अपमानजनक प्रयोग पर राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग ने स्वतः संज्ञान लिया

नई दिल्ली, 26 अप्रैल 2026

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग मीडिया रिपोर्ट्स के आधार पर स्वतः संज्ञान लिया है कि एक चुनावी रैली के दौरान टीएमसी की ममता बनर्जी ने खुलेआम अपमानजनक शब्द "चमार" का इस्तेमाल कर अनुसूचित जाति का अपमान किया है। राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग ने ऐसी अपमानजनक टिप्पणी पर कार्यवाही करने के सख्त निर्देश देते हुए राज्य सरकार को नोटिस जारी किया है। ममता बनर्जी की यह टिप्पणी न केवल शर्मनाक है, बल्कि अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम की धारा 3(1)(२) के तहत दंडनीय अपराध है।

आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री किशोर मकवाना ने स्पष्ट कहा है कि आयोग अनुसूचित जातियों के संवैधानिक अधिकारों एवं गरिमा की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और किसी भी स्तर पर जातिगत अपमान को बर्दाश्त नहीं करेगा। इस मामले में आयोग ने आज पश्चिम बंगाल राज्य के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक को नोटिस जारी किया है। नोटिस में तीन दिनों के भीतर विस्तृत जानकारी मांगी गई है। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में अनुसूचित जाति पर लगातार अत्याचार और हिंसा बढ़ रही है ऐसे में एक मुख्यमंत्री द्वारा ऐसी टिप्पणी दुर्भाग्यपूर्ण है।

माननीय अध्यक्ष श्री किशोर मकवाना के नेतृत्व में आयोग इस मामले की पूरी निगरानी कर रहा है और राज्य सरकार से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर आगे की उचित एवं कठोर कार्रवाई सुनिश्चित करेगा।

बता दें कि 23 अप्रैल 2026 को कोलकाता के चौउरंगी में एक चुनावी रैली के दौरान टीएमसी उम्मीदवार के समर्थन में भाषण देते हुए ममता बनर्जी ने अपनी सरकार द्वारा किए गए कार्यों की व्याख्या करते हुए जनबाजार में चमार शब्द का इस्तेमाल किया था।

पीएम मोदी ने किया राजस्थान के गोडावण का जिक्र, संरक्षण अभियान को सराहा, जानिए इस पक्षी के बारे में

(जीएनएस)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में राजस्थान के गोडावण पक्षी का जिक्र करते हुए इसके संरक्षण अभियान की तारीफ की। पीएम ने कहा कि ये पक्षी विलुप्त होने की कगार पर था। आइए जानते हैं इस पक्षी के बारे में

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गोडावण पक्षी के संरक्षण की सराहना की।

जैसलमेरः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने 'मन की बात' कार्यक्रम के 133वें एपिसोड में राजस्थान के जैसलमेर में चल रहे गोडावण संरक्षण प्रयासों की तारीफ की। उन्होंने कहा कि ग्रेट इंडियन बस्टर्ड को गोडावण के नाम से जाना जाता है। यह पक्षी कभी रेगिस्तानी इलाकों की पहचान हुआ करता था, लेकिन एक समय इसकी संख्या बेहद कम हो गई थी। उन्होंने कहा कि यह पक्षी लुप्त होने की कगार पर था, लेकिन अब ब्रीडिंग सेंटर्स और समर्पित प्रयासों से इनके संरक्षण में एक नई उम्मीद जगी है। इनकी संख्या भी बढ़ रही है।

पीएम मोदी से मिली तारीफ पूरी टीम के लिए गर्व की बातः DFO

जैसलमेर में चल रहे गोडावण के संरक्षण के प्रयासों पर पीएम मोदी से मिली तारीफ से डेजर्ट नेशनल पार्क (DNP) के डीएफओ बृजमोहन गुप्ता गदगद हो गए। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी की ओर से इस काम को सराहा जाना पूरी टीम के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि सुदासरी और रामदेवरा प्रजनन केंद्रों में वैज्ञानिकों और ग्राउंड स्टाफ की मेहनत से इस पक्षी के प्रजनन में सफलता मिली है। अब अगला लक्ष्य सेंटर में जन्मे पक्षियों को धीरे-धीरे प्राकृतिक वातावरण में छोड़ने का है।

गोडावण पक्षी की पहचान क्या?

गोडावण यानी ग्रेट इंडियन बस्टर्ड एक बड़ा और आकर्षक पक्षी है। इसके सिर पर काला 'ताज' होता है, जो इसे अलग पहचान देता है। इसका शरीर भूरे रंग का होता है, जबकि पंखों पर काले, भूरे और ग्रे रंग के निशान होते हैं। नर और मादा आकार में लगभग समान होते हैं, हालांकि नर के सिर पर बड़ा काला ताज और छाती पर काली पट्टी होती है।

आकार और वजन में भी खास होता है गोडावण

इस पक्षी की ऊंचाई करीब 100 सेंटीमीटर से 1 मीटर तक होती है, जबकि पंखों का फैलाव 210 से 250 सेंटीमीटर तक हो सकता है। एक गोडावण का वजन लगभग 15 से 18 किलोग्राम तक होता है, जो इसे भारत के सबसे भारी उड़ने वाले पक्षियों में शामिल करता है।

मौसम के अनुसार अपना भोजन बदलता है गोडावण

गोडावण एक अवसरवादी पक्षी है, जो मौसम के अनुसार अपना भोजन बदलता रहता है। इसके आहार में घास के बीज, टिड्डे, भृंग जैसे कीड़े शामिल होते हैं। इसके अलावा यह छोटे कृंतक और सरीसृप भी खाता है।

मानवीय संवेदनाओं के पयार्यी काव्य संग्रह 'बक्से का कोट' का मुंबई में हुआ भव्य विमोचन

मुंबई, 26 अप्रैल। माननीय राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. अमरीश सिन्हा की नवीनतम पुस्तक 'बक्से का कोट' का गरिमामय लोकार्पण शनिवार, 25 अप्रैल, 2026 को मुंबई के मरीन लाइन्स स्थित वेस्ट एंड होटल में आयोजित सुरुचिपूर्ण समारोह में सम्पन्न हुआ।

सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए जानी जाने वाली संस्था 'धरोहर' के तत्वावधान में आयोजित इस भव्य समारोह में महाराष्ट्र सरकार के माननीय कौशल, रोजगार तथा उद्यमिता मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा ने पुस्तक का विमोचन करते हुए डॉ. सिन्हा को उनकी सृजन यात्रा के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि काव्य संग्रह का लोकार्पण तब सार्थक होता है, जब कवि लोकार्पित पुस्तक से कविता का पाठ करे। उनके अनुरोध पर डॉ. अमरीश सिन्हा ने शीर्षक कविता 'बक्से का कोट' का पाठ करके श्रोताओं को भावुक कर दिया। कोंकण रेलवे के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा लोकप्रिय साहित्यकार संतोष कुमार झा ने कहा कि डॉ. सिन्हा की कविताओं में भाव इतने गहरे होते हैं कि उनका पाठ धीरे-धीरे ही किया जा सकता है। इससे श्रोता को गहरे पानी पैठ की संवेदनात्मक अनुभूति होती है। उन्होंने पुस्तक से तीन कविताओं का पाठ कर तथा कवि के प्रति अपने उद्गार व्यक्त कर सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया। वरिष्ठ लेखक एवं महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के पूर्व कार्याध्यक्ष डॉ दामोदर खड़से ने डॉ. सिन्हा की कविताओं पर चर्चा करते हुए कहा कि इनकी कविताओं में जीवन यात्रा के चित्र उभरते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि डॉ. अमरीश सिन्हा से जो शख़्स एक बार जुड़ता है, वह सदा के लिए इनसे जुड़ जाता है। वरिष्ठ लेखक और साहित्य अकादमी, दिल्ली की पत्रिका के सम्पादक डॉ. बलराम ने अपने अनोखे व बेलाग अंदाज में सभा को सम्बोधित किया। यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कम्पनी के पूर्व चेयरमैन मिलिंद खरात ने डॉ. सिन्हा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। न्यू इंडिया एश्योरेंस के पूर्व महाप्रबंधक के एस रामकुमार ने कहा कि डॉ. अमरीश सिन्हा ने हिंदी भाषा को व्यवसाय से जोड़ा है और हिंदी साहित्य के माध्यम से बीमा व्यवसाय का सफल संचालन कर रहे हैं। यह उल्लेखनीय और अनुकरणीय है। मशहूर अभिनेता और फिल्म निर्देशक डॉ चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने इस अवसर पर कहा कि हृदय में जब पीड़ा की अनुभूति होती है तो कविता का जन्म होता है। 'धरोहर' संस्था के अध्यक्ष, लेखक तथा वरिष्ठ एडवोकेट दीनानाथ तिवारी ने बताया कि वर्ष 1996 में स्थापित 'धरोहर' संस्था प्रभावी ढंग से सामाजिक और शैक्षणिक कार्यों का नियमित रूप से संचालन कर रही है। उन्होंने संस्था की विकास यात्रा एवं अपने अनुभव के बारे में उपस्थित श्रोता-समूह को रोचक तरीके से अवगत कराया। 'धरोहर' संस्था की ओर से कई मनीषियों को इस अवसर पर शॉल, पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर उनका सम्मान किया गया। सभागार में महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, झारखंड और दिल्ली सहित विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में लेखक, पत्रकार एवं बुद्धिजीवी पधारे। इनमें के जी के कुरूप, डॉ के के मेहता, मुंबई अक्वा लाइन मेट्रो रेल के कार्यकारी निदेशक मो. आसिम सुलेमान, पूर्व आईएएस अधिकारी और वरिष्ठ लेखक सेवक नैयर, एड. राहुल तिवारी, एड. तृप्ति तिवारी, एड. आकांक्षा, मुकेश गौतम, आनंद प्रकाश सिंह, गजानन महतपुरकर, सदानंद चितले, प्रिया पोकले, श्रेया काकड़े, सतीश धुरी, सीताराम दुबे, प्रसाद सामंत, नितिन नाइक, रोमा बिस्वास, डॉ आरती जड़िया, दीप्ति सोनी, राजेश सिन्हा, तथ्या तिवारी, रेणु सिन्हा, किरण जैसवार, रीमा राय सिंह, कनक लता तिवारी, रोशनी किरण, विजया मगर, आलोक शंकर, रंजू कुमारी, सोनल, तूलिका, मोनिका सिन्हा, अपूर्व देसाई, शुभम श्रीवास्तव, प्रकाशक विकास शर्मा, मधु सावंत और भारत अडसुले आदि मुख्य रूप से सम्मिलित रहे। करीब दो घंटे चले इस भव्य कार्यक्रम का शुभारम्भ राष्ट्र गान, दीप प्रज्ज्वलन, सरस्वती वंदना, एवं महाराष्ट्र राज्य गीत से हुआ। जाने-माने मंच प्रस्तोता एवं कवि प्रिंस ग्रोवर ने अपने अनूठे अंदाज में समारोह का मंच संचालन कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

योगी सरकार के लिए खतरे की घंटी? सर्वे में यूपी के 33 मंत्रियों से जनता नाराज, सिर्फ 3 को दोबारा टिकट की उम्मीद

(जीएनएस)।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता बरकरार है और गोरखपुर में उन्हें भारी समर्थन मिला है. सर्वे में यह भी सामने आया कि कई सीटों पर मंत्री चेहरों के खिलाफ माहौल है.

उत्तर प्रदेश की राजनीति में क्या जनता का मूड बदल रहा है? दैनिक भास्कर द्वारा किए गए राज्य के सबसे बड़े सर्वे के नतीजे तो कुछ ऐसा ही इशारा कर रहे हैं. सर्वे के मुताबिक, उत्तर प्रदेश सरकार के 40 में से 33 मंत्रियों को जनता दोबारा विधायक के रूप में नहीं देखना चाहती. चौंकाने वाली बात यह है कि केवल 3 मंत्री ही ऐसे हैं, जिन्हें जनता ने दोबारा चुनाव मैदान में उतारने के लिए 'हां' कहा है, जबकि 3 अन्य मंत्रियों पर जनता किसी स्पष्ट राय तक नहीं पहुंच सकी.

व्यवहार और कामकाज बना मंत्रियों की कमजोरी

सर्वे में जनता ने न केवल अपनी पसंद बताई, बल्कि नापसंद करने की ठोस वजह भी गिनाई. 4 मंत्रियों को जनता ने उनके खराब व्यवहार के चलते पूरी तरह नकार दिया है. इनमें शामिल हैंः

सूर्य प्रताप शाही (कृषि मंत्री)

सोमेंद्र तोमर (स्वतंत्र प्रभार राज्य मंत्री)

मनोहर लाल 'मन्नू कोरी' (राज्य मंत्री)

दिनेश खटिक (राज्य मंत्री)

योगी कैबिनेट में कुल 54 मंत्री हैं, जिनमें से 14 एमएलसी हैं. बाकी 40 विधायक मंत्रियों में से 12 कैबिनेट मंत्री, 8 स्वतंत्र प्रभार और 13 राज्य मंत्रियों के कामकाज और चेहरे से जनता खुश नहीं है.

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता बरकरार

एक तरफ जहाँ मंत्रियों के खिलाफ नाराजगी दिख रही है, वहीं

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपनी सीट पर निर्विवाद रूप से सबसे लोकप्रिय नेता बने हुए हैं. गोरखपुर शहर सीट पर सर्वे में शामिल 89% लोगों ने उन्हें दोबारा विधायक बनाने का समर्थन किया है. साथ ही, गोरखपुर की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को ही अपनी पहली पसंद बताया है.

ये हैं वो 3 मंत्री, जिनसे जनता है खुश

सर्वे के अनुसार, कैबिनेट के केवल तीन मंत्रियों का रिपोर्ट कार्ड बेहतर रहा हैः

नितिन अग्रवाल (हरदोई): आबकारी विभाग के स्वतंत्र प्रभार मंत्री और कद्दावर नेता नरेश अग्रवाल के बेटे नितिन अग्रवाल पर जनता ने भरोसा जताया है.

राकेश निषाद (तिंदवारी): जलशक्ति राज्यमंत्री और पहली बार के विधायक राकेश निषाद के कामकाज को जनता ने सराहा है.

सतीश चंद्र शर्मा (दरियाबाद): खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सतीश चंद्र शर्मा भी अपनी लोकप्रियता बनाए रखने में सफल रहे हैं.

डिप्टी सीएम समेत 9 मंत्रियों की सीटों पर 'साइकिल' की धमक

सर्वे के सबसे चौंकाने वाले नतीजों में से एक यह है कि डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक समेत 9 मंत्रियों की सीटों पर जनता की पहली पसंद भाजपा नहीं, बल्कि समाजवादी पार्टी (सपा) बनकर उभरी है. इनमें अनिल राजभर (शिवपुर), ओम प्रकाश राजभर (जहूराबाद), और जयवीर सिंह (मैनपुरी) जैसे बड़े नाम शामिल हैं. इसके अलावा धर्मपाल सिंह, राकेश सचान, संदीप सिंह, रवींद्र जायसवाल और सुरेश राही की सीटों पर भी सपा ने बढ़त बनाई है.

चेहरे नापसंद, लेकिन पार्टी के तौर पर भाजपा पहली पसंद

भले ही मंत्रियों के चेहरों को जनता नकार रही हो, लेकिन पार्टी के रूप में भाजपा का आधार अभी भी मजबूत है. सर्वे के अनुसार, 29 मंत्रियों की सीटों पर आज भी भाजपा जनता की पहली पसंद है. इसमें 6 कैबिनेट मंत्री (जैसे सुरेश खन्ना, लक्ष्मी नारायण, बेबीरानी मौर्य) और 7 स्वतंत्र प्रभार मंत्रियों की सीटें शामिल हैं.

जनता का स्पष्ट कहना है कि वे पार्टी के साथ तो हैं, लेकिन वर्तमान मंत्रियों ने उनके क्षेत्र में विकास नहीं किया है, इसलिए वे चेहरा बदलना चाहते हैं.

महिला मंत्रियों को भी लगा झटका

योगी कैबिनेट की सभी 5 महिला विधायक मंत्रियों, बेबीरानी मौर्य, गुलाब देवी, प्रतिभा शुक्ला, रजनी तिवारी और विजय लक्ष्मी गौतम को जनता ने दोबारा उम्मीदवार बनाने से मना कर दिया है. हालांकि, राहत की बात यह है कि इन पांचों महिला मंत्रियों की सीटों पर जनता ने भाजपा को ही पहली पसंद बताया है. गठबंधन सहयोगी आरएलडी के एकमात्र मंत्री अनिल कुमार (पुरकाजी सीट) को भी जनता ने नकार दिया है. हालांकि, उनकी सीट पर जनता ने चेहरे के बजाय आरएलडी पार्टी को अपनी प्राथमिकता बताया है.

होमगार्ड भर्ती परीक्षा देने जा रहे युवक की मौत, बाइक डिवाइडर से टकराई; साथी चचेरा भाई घायल

लखनऊ, (जीएनएस)।

निगोहां में होमगार्ड भर्ती परीक्षा देने जा रहे युवक की सड़क हादसे में मौत हो गई, जबकि उसका चचेरा भाई घायल हो गया। बाइक डिवाइडर से टकरा गई थी। मृतक परिवार का इकलौता बेटा था। बहन की शादी के अगले दिन हादसे से परिवार में कोहराम मच गया।

निगोहां भगवानपुर गांव के पास रविवार की सुबह सड़क हादसे में होमगार्ड भर्ती की परीक्षा देने जा रहे बाराबंकी फतेहपुर के गौरा करौंदी गांव गई। जबकि उसका चचेरा भाई गंभीर रूप से घायल हो गया। दोनों बाइक से जा रहे थे और उनकी तेज रफ्तार बाइक सीधे डिवाइडर में जा घुसी।

एसओ निगोहां अनुज तिवारी ने बताया कि अनुभव सिंह चचेरे भाई कुलदीप सिंह के साथ बाइक से रायबरेली में आयोजित होमगार्ड भर्ती परीक्षा देने के लिए रविवार सुबह घर से बाइक से निकले थे। बाइक अनुभव चला रहे थे। दोनों जब निगोहां के भगवानपुर गांव के पास पहुंचे,उसी दौरान तेज रफ्तार बाइक अनियंत्रित

हादसे में अनुभव सिंह की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कुलदीप सिंह घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल कुलदीप को उपचार के लिए सीएचसी मोहनलालगंज भेजा और अनुभव के परिजनों को खबर दी। मौके पर पहुंचे परिजनों ने अनुभव के शव का पोस्टमॉर्टम कराने से मना कर दिया। इस पर पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर शव को बिना पोस्टमॉर्टम के ही उनके हवाले कर दिया।

हेलमेट होती तो बच सकती

एसओ अनुज तिवारी ने बताया कि बाइक चल रहे अनुभव ने हेलमेट नहीं पहनी थी। सिर पर चोट लगने से उनकी मौके पर ही मौत हो गई। अगर वह हेलमेट पहने होते तो शायद उनकी जान बच सकती थी।

आज होनी थी बहन की विदाई, घर में मचा कोहराम

अनुभव के परिवार में पिता राजेश सिंह, मां शीला देवी और दो बहनें आकांक्षा व प्रिया हैं। मौके पर रोते बिलखते पहुंचे परिजनों ने बताया कि शनिवार को आकांक्षा की शादी हुई थी।

गरीबों के लिए वरदान बनी 'मुख्यमंत्री सेहत योजना', बठिंडा में समय से पहले जन्मी बच्ची को मिला नया जीवन

निवासी अनुभव सिंह 28 की मौत हो

(जीएनएस)।

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान द्वारा शुरू किए गए सेहत योजना एक गरीब परिवार के लिए वरदान साबित हुई। समय से पहले जन्मी एक नन्हीं बच्ची, जिसका वजन बेहद कम था और जिसे सांस लेने में तकलीफ थी, आज इस योजना की बदौलत सुरक्षित है।

यह सिर्फ एक इलाज की खबर नहीं, बल्कि उन माता-पिता की उम्मीदों की जीत है जो महंगे अस्पतालों का खर्च उठाने में असमर्थ थे। सरकार की इस कैशलेस सुविधा ने डॉक्टरों को पैसों की चिंता किए बिना केवल जान बचाने पर ध्यान देने की ताकत दी।

समय से पहले जन्म की चुनौती

बठिंडा के रामपुरा फूल में रेशम सिंह के घर एक बेटी ने जन्म लिया, लेकिन खुशियों से पहले चिंता की लहर दौड़ गई। बच्ची का जन्म समय से काफी पहले (33 सप्ताह में) हो गया था और उसका वजन मात्र 1.926 किलोग्राम था। जन्म के तुरंत बाद उसे सांस लेने में भारी दिक्कत हो रही थी। ऐसे नाजुक समय में एक-एक सेकंड

होकर डिवाइडर से टकरा गई।

कीमती था और बच्ची को तुरंत एडवांस लाइफ सपोर्ट की जरूरत थी।

NICU में 17 दिनों का संघर्ष

डॉ. सुरिंदर अग्रवाल की देखरेख में बच्ची को तुरंत एनआईसीयू (NICU) में भर्ती किया गया। उसके फेफड़े पूरी तरह विकसित नहीं थे, इसलिए उसे 10 दिनों तक सीपैक (CPAP) मशीन और फिर 4 दिनों तक ऑक्सीजन पर रखा गया। इस दौरान उसे पीलिया भी हो गया, जिसका इलाज फोटोथेरेपी से किया गया। डॉक्टरों की टीम और मशीनों ने मिलकर वह काम किया जो बच्ची का छोटा सा शरीर खुद नहीं कर पा रहा था।

मुख्यमंत्री सेहत योजना का सहारा

इस पूरे इलाज में सबसे बड़ी राहत 'मुख्यमंत्री सेहत योजना' बनी। गरीब परिवार के पास प्राइवेट अस्पताल के भारी-भरकम बिल चुकाने के पैसे नहीं

थी जान

थे, लेकिन इस योजना के तहत बच्ची का पूरा इलाज बिल्कुल मुफ्त (कैशलेस) हुआ। इसने परिवार के सिर से आर्थिक बोझ हटा दिया और डॉक्टरों को भी बिना किसी देरी के बेहतरीन तकनीक और दवाइयों का इस्तेमाल करने की पूरी छूट मिल गई।

ये भी पढ़ें: 'भाजपा का वॉशिंग मशीन मॉडल पंजाब में कभी सफल नहीं होगा', इखढ पर भड़के गुरमीत सिंह

खामोशी से जीत तक का सफर

अस्पताल में 17 दिनों की कड़ी मेहनत के बाद बच्ची की हालत में सुधार होने लगा। उसकी सांसें सामान्य हुईं और शरीर में हरकत बढ़ी। जब उसे अस्पताल से छुट्टी मिली, तो उसका वजन बढ़कर 2.106 किलोग्राम हो चुका था। डॉ. अग्रवाल ने बताया कि एनआईसीयू में सुधार धीरे-धीरे आता है, और सही समय पर मिला मुफ्त इलाज इस बच्ची की जान बचाने में सबसे अहम साबित हुआ।

उम्मीद की नई किरण

होशियारपुर के मनिंदर सिंह जैसे कई अन्य परिवार भी इस योजना का लाभ उठा रहे हैं। उनकी बेटी गुरकीरत का इलाज भी कार्ड के जरिए मुफ्त

मुंबई के डोंगरी का सलीम दादा कैसे बना दाउद के ₹252 करोड़ का ड्रग किंगपिन? इस्तांबुल में दबोचा गया

(जीएनएस)।

तुर्की की राजधानी इस्तांबुल में एक बड़ी अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई में दाऊद इब्राहिम का करीबी सहयोगी और कुख्यात ड्रग सरगना सलीम डोला (59) गिरफ्तार हो गया। तुर्की की राष्ट्रीय खुफिया एजेंसी (टक्ळ) और स्थानीय पुलिस की संयुक्त टीम ने उसे दबोचा है।

सलीम डोला लंबे समय से भारत की कई एजेंसियों की नजर में था और इंटरपोल का रेड कॉर्नर नोटिस भी उसके खिलाफ जारी था। अब उसे भारत प्रत्यर्पित करने की प्रक्रिया शुरू होने वाली है।

सलीम डोला कौन है? डोंगरी से दाऊद गैंग तक का सफर

मुंबई के डोंगरी इलाके का रहने वाला सलीम डोला द-कंपनी के ड्रग सिंडिकेट का अहम कड़ी माना जाता है। 2015-16 में वह भारत से फरार हो गया था। उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट (NDPC Act) के तहत 8 से 10 गंभीर मामले दर्ज हैं। ये मामले कमर्शियल मात्रा में सिंथेटिक ड्रग्स (खासकर मेफेड्रोन या टऊ) की तस्करी, निर्माण और सप्लाई से जुड़े हैं।

अधिकारियों के मुताबिक, सलीम डोला भारत-मध्य पूर्व तक फैले अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क को संचालित करता था। वह हवाला लेन-देन, फर्जी यात्रा दस्तावेज और जाली वअए आईडी का इस्तेमाल करके अपनी पहचान छिपाए हुए था। उसका नेटवर्क कृत्रिम दवाओं (सिंथेटिक ड्रग्स) के निर्माण, तस्करी और वितरण में सक्रिय था।

252 करोड़ का मुंबई-सांगली ड्रग केस, कैसे जुड़ा सलीम डोला?

इस गिरफ्तारी की जड़ मुंबई पुलिस की एंटी-नारकोटिक्स सेल की उस बड़ी जांच में है, जिसमें 252 करोड़ रुपये से ज्यादा का मेफेड्रोन जब्त हुआ था।

15 फरवरी 2024: सायाजी पगारे चॉल के पास एक महिला कूरियर को 641 ग्राम टऊ, 12.2 लाख नकद, सोने के जेवरात और मोबाइल के साथ गिरफ्तार किया गया।

पूछताछ में उसने दुबई स्थित सलीम डोला, उसके सहयोगी मोहम्मद सलीम सोहेल शेख उर्फ लाविश (29) और साजिद मोहम्मद आसिफ शेख उर्फ डैब्स का नाम लिया।

सलीम डोला (बीच में) और उसका बेटा ताहिर डोला (दाएं), भांजा मुस्तफा कुब्बावाला (बाएं)।

इसके बाद मुंबई क्राइम ब्रांच और सांगली पुलिस ने सांगली जिले के कावठे महांकाल तालुका के इरती गांव में छापा मारा।

123 किलो मेफेड्रोन (कुल 126 किलो तक रिपोर्ट), लैब उपकरण (ओवन, मिक्सर, फिल्ट्रेशन यूनिट) जब्त हुए। सलीम डोला का बेटा ताहिर सलीम डोला (30) भी इसी केस में नाम आने के बाद जून 2025 में वअए से डिपोर्ट होकर भारत आया था। वहीं, 11 जुलाई 2025 को सलीम डोडा के भांजे मुस्तफा कुब्बावाला को संयुक्त अरब अमीरात (वअए) से गिरफ्तार कर भारत लाया है। लाविश को भी दुबई से डिपोर्ट कर गिरफ्तार किया गया था।

क्या हैं आगे के मायने?

तुर्की में सलीम डोला की गिरफ्तारी को दाऊद इब्राहिम के ड्रग सिंडिकेट पर करारा झटका माना जा रहा है। भारतीय एजेंसियां (ठउइ, मुंबई पुलिस, उइक) अब उसे भारत लाकर मुकदमा चलाने की तैयारी में हैं। ठऊढर एक्ट के तहत सजा न्यूनतम 10 साल की है और जमानत मिलना बेहद मुश्किल।

पुलिस ने स्पष्ट किया कि लाविश की पूछताछ में कुछ बॉलीवुड हस्तियों (श्रद्धा-सिद्धांत कपूर, नोरा फतेही, ओररी, अब्बास-मस्तान आदि) के नाम आए थे, लेकिन उनके खिलाफ कोई ठोस सबूत नहीं मिला। इसलिए चार्जशीट में इन नामों को शामिल नहीं किया जाएगा।

यह गिरफ्तारी सिर्फ एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैले सिंथेटिक ड्रग नेटवर्क की बड़ी सफलता है। सलीम डोला जैसे किंगपिन पकड़े जाने से द-कंपनी की कमर टूटने वाली है। अब देखना होगा कि प्रत्यर्पण कितनी जल्दी होता है और आगे और कितने बड़े खुलासे होते हैं। आप क्या सोचते हैं? दाऊद गैंग पर ऐसे लगातार वार कितने असरदार साबित होंगे? कमेंट में जरूर बताएं।

यूपी में वक्फ संपत्तियों पर बड़ी कार्रवाई, लखनऊ-बिजनौर समेत कई जिलों में 12 हजार पंजीकरण रद्द, जानें वजह

(जीएनएस)।

उत्तर प्रदेश में वक्फ संपत्तियों के डिजिटलीकरण अभियान के तहत 'उम्मीद पोर्टल' पर बड़ी कार्रवाई हुई है. दस्तावेजों में कमी और गलत जानकारी के कारण राज्य के 12,000 से अधिक वक्फ संस्थानों के पंजीकरण निरस्त कर दिए गए हैं. इनमें लखनऊ और बिजनौर जिले सबसे आगे हैं. प्रभावित संस्थानों को अपनी गलतियां सुधारकर 5 जून तक दोबारा आवेदन करने का अंतिम अवसर दिया गया है, ताकि संपत्तियों का पारदर्शी डिजिटल रिकॉर्ड तैयार किया जा सके.

लखनऊः उत्तर प्रदेश में वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन और पारदर्शिता को लेकर राज्य सरकार और वक्फ बोर्ड बेहद सख्त नजर आ रहे हैं. केंद्र सरकार के 'उम्मीद पोर्टल' पर चल रहे सत्यापन कार्य के दौरान यूपी में एक बड़ा खुलासा हुआ है. राज्य भर में अब तक 12 हजार से अधिक वक्फ संपत्तियों के पंजीकरण खारिज कर दिए गए हैं. डिजिटल रिकॉर्ड तैयार करने की इस प्रक्रिया में लखनऊ और बिजनौर जैसे जिले सबसे ऊपर हैं, जहां भारी संख्या में खामियां पाई गई हैं.

क्यों रद्द हुए 12 हजार पंजीकरण?

जांच में सामने आया है कि पंजीकरण रद्द होने की मुख्य वजह

डाटा एंट्री में गलतियां और अधूरे दस्तावेज हैं. कई संस्थानों ने पोर्टल पर जानकारी तो दी, लेकिन उसके समर्थन में जरूरी कानूनी कागजात अपलोड नहीं किए. निरस्त की गई इन संपत्तियों में छोटी मस्जिदों की जमीन से लेकर 300 एकड़ तक के बड़े कब्रिस्तान शामिल हैं. आंकड़ों के मुताबिक, सबसे ज्यादा गाज कब्रिस्तानों के पंजीकरण पर गिरी है, जबकि दूसरे नंबर पर मस्जिदें हैं. इनके अलावा मदरसे, ईदगाह, इमामबाड़ा और दरगाह भी इस कार्रवाई की जद में आए हैं.

लखनऊ और बिजनौर में सबसे बुरा हाल

पंजीकरण निरस्त होने के मामले में राजधानी लखनऊ पहले पायदान पर है, जहां 1,114 वक्फ संपत्तियों के आवेदन मानकों पर खरे नहीं उतरे. इसके ठीक बाद बिजनौर का नंबर आता है, जहां 1,003 आवेदन खारिज किए गए हैं. अन्य जिलों की स्थिति भी कुछ ऐसी ही हैः

सहारनपुरः 990 मामले रद्द
बाराबंकीः 577 मामले रद्द
अमरोहाः 85 मामले रद्द
बागपतः 60 मामले रद्द
बरेलीः 17 मामले रद्द

सुधार के लिए मिला अंतिम मौका

वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष जफर अहमद फारूकी ने स्पष्ट किया है कि यह कार्रवाई स्थायी नहीं है, बल्कि सुधार का एक मौका है. जिन संस्थानों के पंजीकरण खारिज हुए हैं, वे 5 जून तक सही जानकारी और आवश्यक दस्तावेजों के साथ दोबारा आवेदन कर सकते हैं. पोर्टल पर फाइनल डेटा अपलोड करने की आखिरी तारीख 6 जून तय की गई है. इसके बाद किसी भी चूक के लिए संस्थान खुद जिम्मेदार होंगे.

क्या है 'उम्मीद पोर्टल' और इसका उद्देश्य?

केंद्र सरकार ने पिछले वर्ष जून में 'उम्मीद पोर्टल' की शुरूआत की थी. इसका मुख्य उद्देश्य वक्फ संपत्तियों का एक ऐसा डिजिटल डेटाबेस तैयार करना है, जिससे भ्रष्टाचार पर लगाम लगे और संपत्तियों का प्रबंधन आसान हो सके. वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 के तहत यह प्रक्रिया अनिवार्य की गई है. यूपी सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड के अधीन करीब 1.26 लाख संपत्तियां पंजीकृत हैं, जिनका अब पूर्ण डिजिटलीकरण किया जा रहा है. इससे न केवल संपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि उनकी आय और उपयोग में भी पारदर्शिता आएगी.

लखनऊः 986 महिला आरक्षियों की पासिंग आउट परेड, आधुनिक पुलिसिंग प्रशिक्षण का प्रदर्शन

(जीएनएस)।

लखनऊ में 986 महिला रिक्रूट आरक्षियों की दीक्षांत परेड 26 अप्रैल को होगी, जिसमें सीएम योगी सलामी लेंगे और साइबर क्राइम सहित आधुनिक पुलिसिंग प्रशिक्षण का प्रदर्शन किया जाएगा.

आरक्षी नागरिक पुलिस भर्ती-2025 के तहत चयनित 60,244 आरक्षियों में से पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ की आरटीसी में प्रशिक्षण प्राप्त 986 महिला रिक्रूट आरक्षियों की दीक्षांत परेड 26 अप्रैल को रिजर्व पुलिस लाइंस, महानगर, लखनऊ में आयोजित होगी. परेड का निरीक्षण कर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सलामी लेंगे. प्रशिक्षण के दौरान इन महिला आरक्षियों को आधुनिक पुलिसिंग से लेकर साइबर क्राइम तक का प्रशिक्षण दिया गया है.

कार्यक्रम सुबह करीब 8 बजे शुरू होगा और इसे प्रदेश के सभी जनपदों के पुलिस लाइंस, पीएसी वाहिनियों व प्रशिक्षण संस्थानों में लाइव टेलीकास्ट किया जाएगा. इससे एक साथ पूरे प्रदेश में महिला सशक्तीकरण के साथ-साथ पुलिस बल में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का भी मजबूत संदेश जाएगा.

2017 के बाद महिलाओं की रिकॉर्ड भर्ती

1947 से लेकर 2017 तक यूपी पुलिस में सिर्फ 10 हजार महिलाओं की भर्ती हुई थी, जबकि 2017 के बाद यह संख्या 44 से 45 हजार पहुंच गई है. अब प्रदेश में पुलिस भर्ती होने पर 20 प्रतिशत महिलाओं की भर्ती को अनिवार्य कर दिया गया है.

फिजिकल ट्रेनिंग के साथ पुलिसिंग पर फोकस

आरक्षी नागरिक पुलिस भर्ती-2025 के तहत प्रशिक्षण प्राप्त कर रहीं महिला आरक्षियों को फिजिकल ट्रेनिंग के साथ-साथ आधुनिक पुलिसिंग के सभी जरूरी पहलुओं में प्रशिक्षित किया गया है.

प्रशिक्षण में सोशल पुलिसिंग, साइबर क्राइम की रोकथाम, आधुनिक तकनीक, सीसीटीएनएस, फॉरेंसिक साइंस व मेडिसिन, हथियार संचालन, अपराध नियंत्रण, विवेचना, पुलिस अभियोजन, सुरक्षा व्यवस्था, आपदा प्रबंधन, यातायात प्रबंधन और पुलिस रेडियो संचार प्रणाली जैसे विषय शामिल रहे.

आधुनिक, संवेदनशील और सक्षम पुलिस कर्मी के रूप में किया गया तैयार

इसके साथ ही भारतीय संविधान, मानवाधिकार, लैंगिक संवेदनशीलता, पुलिस की कार्यप्रणाली, अनुशासन, नैतिकता और जवाबदेही पर भी विशेष जोर दिया गया.

व्यावहारिक प्रशिक्षण के तहत आरक्षियों को गार्ड ड्यूटी, बंदी एस्कॉर्ट, हवालात ड्यूटी, वर्दी पहनने के नियम, अधिकारियों की वर्दी पहचान, सैल्यूट की विधि, योग, खेल और श्रमदान जैसी गतिविधियों में भी दक्ष बनाया गया. यह प्रशिक्षण महिला आरक्षियों को आधुनिक, संवेदनशील और सक्षम पुलिस कर्मी के रूप में तैयार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है.

मोजतबा खामेनेई की भी हो चुकी है मौत? पोस्टर में 'शहीद' की तरह दिखी तस्वीर

(जीएनएस)।

ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के बेटे, मोजतबा खामेनेई को लेकर इन दिनों रहस्य गहरा गया है। हाल ही में शहीदों को समर्पित एक आधिकारिक कार्यक्रम में उनकी तस्वीर प्रदर्शित की गई, जिसने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा।

आमतौर पर ऐसी जगहों पर केवल दिवंगत शहीदों की तस्वीरें ही लगाई जाती हैं, जिससे यह अटकलें तेज हो गई हैं कि क्या मोजतबा के साथ कोई अनहोनी हुई है। उनकी लंबे समय से सार्वजनिक अनुपस्थिति और इजराइली या अमेरिकी हमलों से जुड़ी अपुष्ट खबरें इस सस्पेंस को और बढ़ा रही हैं।

मोजतबा खामेनेई की तस्वीर पर छिड़ा विवाद

ईरान में रिवोल्यूशनरी गार्ड्स (क्म्क्क्ष्ठ) द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में मोजतबा खामेनेई का पोस्टर उन लोगों के साथ लगाया गया जिन्हें 'शहीद' माना जाता है। इस घटना ने राजनीतिक गलियारों में खलबली मचा दी है। जानकारों का कहना है कि ईरान में प्रोटोकॉल बहुत सख्त हैं; ऐसे में जीवित व्यक्ति की तस्वीर शहीदों के बीच दिखना या तो बहुत बड़ी गलती है या फिर किसी बड़ी सच्चाई को छिपाने की कोशिश। अभी तक सरकार ने इस पर कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया है।

घायल होने की खबरें और रहस्यमयी चुप्पी

सोशल मीडिया और कुछ विदेशी मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि मोजतबा हालिया सैन्य हमलों में गंभीर रूप से घायल हुए थे। कुछ सूत्रों के अनुसार, उनके चेहरे पर चोटें आई हैं और वे बोलने की स्थिति में नहीं हैं। हालांकि, इन दावों की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है। ईरान में शीर्ष नेताओं की सेहत को लेकर हमेशा गोपनीयता बरती जाती है, जिससे जनता और विश्लेषकों के बीच भ्रम की स्थिति बनी हुई है।

हर तरह के हमले का जवाब देने के लिए तैयार

इस तनाव के बीच, इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) ने घोषणा की है कि उनकी सेना हर तरह के हमले का जवाब देने के लिए तैयार है। उन्होंने अपनी रक्षात्मक योजनाओं को अपडेट किया है और जमीनी युद्ध के लिए भी तैयारी तेज कर दी है। सेना का कहना है कि वे न केवल सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं, बल्कि दुश्मन की हर खुफिया गतिविधि पर भी नजर रख रहे हैं। यह बयान मोजतबा से जुड़ी अफवाहों के बीच देश की मजबूती दिखाने की कोशिश माना जा रहा है।

होर्मुज स्ट्रेट और अमेरिका को चेतावनी

ईरान ने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण 'होर्मुज स्ट्रेट' पर अपनी पकड़ और मजबूत करने की बात कही है। खातम अल-अंबिया मुख्यालय ने चेतावनी दी है कि यदि अमेरिका या उसके सहयोगियों ने समुद्री नाकेबंदी की कोशिश की, तो ईरान कड़ा जवाब देगा। ईरान का मानना है कि इस क्षेत्र में अमेरिकी प्रभाव कम हो रहा है और उसे अंततः पीछे हटना पड़ेगा। मोजतबा को लेकर चल रहे सस्पेंस के बीच ईरान अपनी सैन्य ताकत के जरिए दबाव बनाने की रणनीति अपना रहा है।

बालेन सरकार का चीन को बड़ा झटका, ड्रैगन के साथ हुए कई समझौतों की जांच के आदेश

(जीएनएस)।

नेपाल में सत्ता परिवर्तन के साथ ही चीन के साथ हुए पिछले आर्थिक समझौतों पर सवाल उठने लगे हैं। दिल्ली के थिंक टैंक 'कळफ्र' के अनुसार, चीन ने आर्थिक मदद के बहाने नेपाल की राजनीति और आंतरिक निर्णयों में हस्तक्षेप बढ़ाया है।

पूर्व प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली के कार्यकाल में हुए कई बड़े समझौतों को अब शक की निगाह से देखा जा रहा है। नई सरकार ने स्पष्ट किया है कि जब तक पुरानी अटकी हुई परियोजनाओं की जांच पूरी नहीं होती, चीन के साथ कोई नया समझौता नहीं किया जाएगा।

ओली सरकार के फैसलों पर सवाल

के.पी. शर्मा ओली के कार्यकाल (2016-2018) के दौरान नेपाल ने चीन की 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (BRI) में शामिल होकर कई ऐतिहासिक समझौतों पर हस्ताक्षर किए थे। उस समय इन्हें नेपाल की आर्थिक आजादी के लिए क्रांतिकारी बताया गया था। हालांकि, अब यह आरोप लग रहे हैं कि इन प्रोजेक्ट्स के पीछे कोई ठोस वित्तीय योजना नहीं थी। नई सरकार यह जांच कर रही है कि आखिर क्यों ये समझौते केवल कागजों तक सीमित रह गए और इनका लाभ नेपाल की जनता को क्यों नहीं मिला।

अटकी हुई प्रमुख परियोजनाएं

नेपाल में चीन की कई बड़ी योजनाएं सालों से ठप पड़ी हैं। इनमें बूढ़ी गंडकी जलविद्युत परियोजना सबसे प्रमुख है, जिसका ठेका कई बार रद्द और बहाल हुआ, लेकिन काम आगे नहीं बढ़ा। इसी तरह, काठमांडू को चीन से जोड़ने वाली केरंग-काठमांडू रेलवे भी तकनीकी और वित्तीय कारणों से 2026 तक अटकी हुई है। ट्रांस-हिमालयी कनेक्टिविटी नेटवर्क और सीमा पार बिजली लाइनों जैसे प्रोजेक्ट्स भी सिर्फ चर्चा का विषय बनकर रह गए हैं, जिससे नेपाल के विकास को धक्का लगा है।

डिजिटल और सुरक्षा संबंधी चिंताएं

आर्थिक प्रोजेक्ट्स के अलावा, चीन की टेक कंपनियों जैसे हुवावे और ळए द्वारा नेपाल में किए जा रहे डिजिटल विस्तार ने भी नई सरकार की चिंता बढ़ा दी है। 2017 से शुरू हुए इन प्रयासों की गति बहुत धीमी है और इनके रणनीतिक प्रभाव को लेकर सवाल उठ रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि डिजिटल बुनियादी ढांचे में चीनी हस्तक्षेप से नेपाल की डेटा सुरक्षा और संप्रभुता पर खतरा हो सकता है, यही कारण है कि इन प्रोजेक्ट्स की भी गहन समीक्षा की जा रही है।

नई सरकार का कड़ा रुख

नेपाल की वर्तमान सरकार अब चीन के साथ अपने संबंधों में सावधानी बरत रही है। सरकार ने साफ कर दिया है कि परियोजनाओं में देरी और पारदर्शिता की कमी को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। रसुवागढ़ी सीमा पर बुनियादी ढांचे के निर्माण और उत्तरी राजमार्गों की अधूरी स्थिति ने बीजिंग की नीयत पर सवाल खड़े किए हैं। जब तक इन पुरानी परियोजनाओं में प्रगति नहीं होती और इनकी वित्तीय पारदर्शिता स्पष्ट नहीं होती, तब तक नेपाल चीन के साथ किसी भी नई डील पर हस्ताक्षर नहीं करेगा।

अर्चना पूरन सिंह के बेटे आयुष्मान फिर बने ठगों के शिकार, इस बार कैसे हो गया ₹87000 का स्कैम?

(जीएनएस)।

अभिनेता अर्चना पूरन सिंह और पति परमीत सेठी के छोटे बेटे आयुष्मान सेठी हाल ही में ऑनलाइन स्कैम का शिकार हो गए। उनके क्रेडिट कार्ड से बिना अनुमति के 87,000 रुपये कट गए।

यह घटना उनके बड़े भाई आर्यमन सेठी के यूट्यूब चैनल 'आर्य व्लॉग्स' पर एक व्लॉग में सामने आई, जहां पूरा परिवार इस मामले पर खुलकर बात करता दिखा। शुरू में तो चिंता और परेशानी छाई रही, लेकिन बाद में हंसी-मजाक के साथ परिवार ने इस स्कैम को हैंडल कर लिया...

व्लॉग में क्या हुआ? पूरा किस्सा

आर्यमन के व्लॉग में आयुष्मान काफी परेशान नजर आए। उन्होंने बताया, 'मेरे क्रेडिट कार्ड से 87,000 रुपये निकाल लिए गए।' यह सुनते ही मां अर्चना पूरन सिंह ने तुरंत सलाह दी, 'इसे रद्द कर दो। क्रेडिट कार्ड कंपनी को फोन करो।'

आयुष्मान ने स्थिति समझाई, 'उन्होंने सात दिन के मुफ्त ट्रायल के बहाने पूरे साल का पैसा ले लिया।' अर्चना आश्चर्य से बोलीं, '87,000 रुपये?' और फिर दोबारा कार्ड रद्द करने की सलाह दी। पिता परमीत सेठी (ढर्शेी३ रीइँ) ने शांति बनाए रखते हुए कहा, 'कार्ड रद्द न करें, भुगतान रद्द करें।' लेकिन आयुष्मान अभी भी कन्फ्यूज थे और पूछ बैठे, 'मुझे वह विकल्प कहां मिलेगा?' इस पर पूरा परिवार हंस पड़ा।

आर्यमन ने मजाक में छोटे भाई से कहा, 'तुम मम्मी-पापा से ये पैसे नहीं ले सकते।' अर्चना ने हंसते हुए याद दिलाया, 'ये तुम्हारे ही पैसे हैं।' आयुष्मान ने बचाव में कहा, 'मैंने ये पापा के लिए किया!' परमीत हंस पड़े, लेकिन अर्चना ने तंज कसा, 'वो तुमसे पैसे ले लेंगे। तो तुम इतने खुश क्यों हो रहे हो?' परमीत ने कहा, 'मैं खुश नहीं हूं, मैं बस यह सोच रहा हूं कि वह इस बात को लेकर कितना घबरा रहा है।'

पुरानी याद ताजा हो गई

आर्यमन ने व्लॉग में एक पुरानी घटना भी याद की। उन्होंने बताया, 'जब हम मेरे गाने 'छोटी बातें' के लिए रेकी कर रहे थे, तब आयुष्मान को मैसेज आया कि उनके प्लेस्टेशन खाते से करीब 80,000 रुपये डेबिट हो गए। वो पैसे कभी वापस नहीं मिले।'

आयुष्मान का बचाव और परिवार की हंसी

आयुष्मान ने स्कैम की डिटेल बताई, 'किसी ने मेरी अनुमति के बिना मेरे क्रेडिट कार्ड से पैसे निकाल लिए। उन्होंने सात दिन का फ्री ट्रायल दिया और कहा कि सातवें दिन बाद शुल्क लिया जाएगा। लेकिन उन्होंने बिना पूछे पूरे साल का चार्ज एक साथ काट लिया। पहले 0 डॉलर का ट्रांजेक्शन हुआ, जिसे मैंने अप्रूव कर दिया। एक घंटे बाद 87,000 रुपये कट गए।'

परमीत ने कहा, 'तुम हमेशा जल्दी में रहते हो।' आयुष्मान ने विरोध जताया, 'मैं जल्दी में नहीं था। मैं तुम्हारा काम कर रहा था।' फिर बोले, 'आप लोग इससे नहीं निपटेंगे। मैं खुद ठीक कर लूंगा। यहां किसी के पास कोई विशेषज्ञता नहीं है।'

जब पूछा गया कि क्या वो परेशान हैं, तो आयुष्मान ने कहा, 'मैं परेशान नहीं हूं। मैं गेम खेल रहा था। जवाब आने में 48 घंटे लगेंगे।' आर्यमन ने हंसते हुए पूछा, 'तुमने अभी-अभी 87,000 रुपये गंवा दिए और यहां बैठकर गेम खेल रहे हो?' आयुष्मान का जवाब था, 'मेरे पास कोई विकल्प नहीं है।'

सेवा प्रदाता से संपर्क करने की कोशिश में भी मुश्किल आई। आयुष्मान ने कहा, 'वे मुझे सिर्फ एआई से बात करवा रहे हैं।' इस पर परिवार फिर हंस पड़ा। परमीत ने सुझाव दिया, 'ईमेल से हेल्प सेंटर तक पहुंचने की कोशिश करो।'

'रिपीट कस्टमर' बन गए आयुष्मान?

आयुष्मान ने माना कि करीब एक साल पहले भी उनके साथ ऐसी ही धोखाधड़ी हुई थी, लेकिन उस वक्त पैसे वापस मिल गए थे। योगिता (शायद परिवार की कोई सदस्य) ने मजाक में कहा, 'इसका मतलब है कि आप धोखाधड़ी करने वालों के नियमित ग्राहक हैं।' परमीत ने अंत में गंभीरता से कहा, 'इस बार ऐसा नहीं है। आपने बटन दबाया और उन्हें पैसे काटने की अनुमति दी।'

क्या सीख मिली?

यह स्कैम फ्री ट्रायल के नाम पर आम हो रही ऑनलाइन ठगी का एक और उदाहरण है। आयुष्मान जैसे युवा अक्सर जल्दबाजी में छोटे-छोटे ट्रांजेक्शन को अप्रूव कर देते हैं, जिसका फायदा स्कैमर्स उठा लेते हैं। परिवार ने इस घटना को हल्के-फुल्के अंदाज में शेयर किया, ताकि लोग सतर्क रहें।

आर्यमन के व्लॉग ने दिखाया कि सेलिब्रिटी परिवार भी इन स्कैम से अछूते नहीं हैं।

बैंक से तुरंत संपर्क करें, कार्ड ब्लॉक करें और जरूरी दस्तावेज रखें- ये छोटी-छोटी सावधानियां भारी नुकसान से बचा सकती हैं।

87,000 रुपये गए, लेकिन परिवार की हंसी और एकजुटता ने इस स्कैम को यादगार बना दिया। आयुष्मान अब खुद इसे सुलझाने की जिम्मेदारी ले रहे हैं। आपने कभी ऐसा स्कैम फेस किया? कमेंट में अपना अनुभव शेयर करें।

क्या ट्रंप ने खुद करवाई फायरिंग? प्रेस सचिव के 'फायर शॉट' वाले बयान से गहराया शक

(जीएनएस)।

अमेरिका के वॉशिंगटन हिल्टन होटल में हुई गोलीबारी की घटना ने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया है। जहां लोग डोनाल्ड ट्रंप का भाषण सुनने के लिए उत्साहित थे, वहां अचानक गोलियों की आवाज गूंजने लगी। इस हमले ने राष्ट्रपति की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

इसी बीच ट्रंप की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट का एक पुराना वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें उन्होंने मजाक में 'फायर-शॉट' की बात कही थी, जो हकीकत में बदल गई। कैरोलिन लेविट का वायरल वीडियो

व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने घटना से ठीक पहले फॉक्स न्यूज को एक इंटरव्यू दिया था। इसमें उन्होंने दर्शकों से ट्रंप का भाषण सुनने की अपील की थी। लेविट ने मजाकिया लहजे में कहा था कि ट्रंप का अंदाज हमेशा की तरह धमाकेदार होगा और भाषण के दौरान कुछ 'फायर-शॉट' (तीखे हमले) देखने को मिलेंगे। उस समय उनके इस बयान को केवल राजनीतिक तंज माना गया था, लेकिन कुछ ही देर बाद वहां सचमुच गोलियां चल गईं।

होटल में हमले का

खौफनाक मंजर

वॉशिंगटन हिल्टन होटल में पत्रकारों का डिनर शुरू होने ही वाला था कि तभी एक हथियारबंद हमलावर ने सुरक्षा घेरा तोड़ने की कोशिश की। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, हमलावर के पास शॉटगन थी और उसने एक सीक्रेट सर्विस एजेंट पर गोली भी चलाई। सुरक्षा जैकेट की वजह से एजेंट की जान बच गई। अचानक हुई इस गोलीबारी से पूरे हॉल में अफरा-तफरी मच गई और लोग जान बचाने के लिए टेबल के नीचे छिपने लगे।

सीक्रेट सर्विस की त्वरित कार्रवाई

गोली चलते ही यूनाइटेड स्टेट्स सीक्रेट सर्विस के एजेंट तुरंत एक्शन में आ गए। उन्होंने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और फर्स्ट लेडी मेलानिया ट्रंप को सुरक्षित तरीके से हॉल से बाहर निकाला। सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत पूरे परिसर को फौरन खाली करा लिया गया। सुरक्षा बलों ने मुस्तैदी दिखाते हुए हमलावर को मौके पर ही दबोच लिया। ट्रंप ने बाद में अपनी टीम और सुरक्षा एजेंसियों की बहादुरी की जमकर तारीफ की और सबको सुरक्षित बताया।

संयोग या कुछ और?

लेविट के 'फायर-शॉट' वाले बयान के बाद अब सोशल मीडिया पर नई बहस छिड़ गई है। लोग हैरान हैं कि आखिर उन्होंने ऐसे शब्दों का इस्तेमाल क्यों किया जो बाद में हकीकत बन गए। हालांकि, उनके समर्थकों का कहना है कि लेविट का मतलब ट्रंप की तीखी बयानबाजी से था, न कि असली गोलियों से। फिलहाल जांच एजेंसियां इस बात का पता लगा रही हैं कि हमलावर होटल के भीतर हथियार लेकर कैसे पहुंचा और उसकी असली साजिश क्या थी।